–: सम्पादक :–
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
– सहायक –
मु० सरवर फारूकी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

मई, 2003 वर्ष 2 अंक 3

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2787250
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी ऑफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफत व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हकीम लुक़मान से पूछा गया कि आप को इस श्रेष्ठता के पद तक किस कर्म ने पहुंचाया?

•

उत्तर दिया : बात की सच्चाई, अमानत की अदाएगी और व्यर्थ बातों के त्याग ने।

विषय एक नज़र में

- प्रीतम वर्णन की मन मोहन सुगन्ध — सम्पादकीय 3
- क़ुर्आन की शिक्षा — मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) 5
- प्यारे नबी की प्यारी बातें — मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी 6
- जुमुअ़ः (जुमा) हफ़्ते की ईद — मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली हसनी 7
- मदरसों के सामने आने वाली समस्याएं और उनका हल — अध्यक्ष मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड 9
- नबी की नअ़त — आ़सी लखनवी 13
- बच्चियों की तालीम व तरबियत — ख़ैरुन्निसा बेहतर.................... 14
- मुसलमानों के सद्व्योहार के नमूने — डा० इज्तिबा नदवी.................... 16
- इस्लाम की प्रमुख विशेषताएं — डा० मुह़सिन उसमानी.................... 18
- भारत में कभी भी इस्लाम के खिलाफ विद्वेष नहीं रहा — मौलाना अब्दुल करीम पारेख.................... 22
- आप की समस्यायें और उनका ह़ल — मुह़म्मद सरवर फ़ारूकी नदवी.................... 27
- नींद उचाट क्यों होती है ? — हबीबुल्लाह आज़मी 29
- जिन्नात का परिचय — अबू मर्ग़ूब 31
- तौरात — आसिफ अन्जा़र.................... 32
- सृष्टि, मनुष्य और जीवन — मुहम्मद जाहिर.................... 35
- अन्तिम संदेष्टा की जन्म तिथि — मो० अ़ली जौहर 37
- रसूललुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम — हबीबुल्लाह आजमी 38
- अन्तर्राष्ट्रीय समाचार — मुईद अशरफ़ नदवी.................... 40

□□□

बिस्मिल्लाहिर्रेहमानिर्रहीम

प्रीतम वर्णन की मनमोहन सुगन्ध
किताब व सुन्नत में

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) अपने सृष्टा के प्रिय हैं। सृष्टि के प्रिय हैं। समस्त फिरिश्तों के प्रिय हैं। समस्त पैग़म्बरों (सन्देष्टाओं) के प्रिय हैं। समस्त नेक लोगों के प्रिय हैं। "उस व्यक्ति का ईमान परिपूर्ण नहीं हो सकता अर्थात वह पक्का मुसलमान नहीं हो सकता जिसको हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने मां बाप, अपनी आल औलाद (अर्थात परिवार) बल्कि संसार की हर वस्तु यहां तक कि अपने प्राण (जान) से भी अधिक प्रिय न हों"। (हदीस)। आप हम सब के प्रिय हैं, प्रीतम हैं। सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम।

हज़रत ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ने अपने रब से आप के भेजे जाने की मांग इस प्रकार की थी "हे परमेश्वर (परवरदिगार) तू इन में अर्थात (मेरी सन्तान में) इन्हीं में से एक ऐसा रसूल भेज जो इन पर तेरी आयतों का पाठ करे, इनको किताब और हिकमत (ज्ञान) सिखाए, तथा इनको गुनाहों से पाक करे निःसन्देह तू प्रभुत्वशाली सर्वज्ञानीहै।" (२:१२६) रब को तो यह करना ही था दुआ क़बूल कर ली और निश्चित समय पर अपने प्रिय को भेज कर एलान कर दिया : "निःसन्देह अल्लाह ने ईमान वालों पर इहसान किया इस प्रकार कि उनमें उन ही में से एक रसूल भेजा जो उन पर इलाही आयत पढ़ता है, उनको पापों से पवित्र करता है, उनको किताब तथा ज्ञान सिखाता है।" (३:१६४) और कह दिया मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं (४८:२६) रब ने अपने प्यारे नबी को कैसे कैसे सम्बोधित किया, सुनिये : आप रसूलों में से हैं (३६:३) आपको हक़ के साथ खुशखबरी देने वाला तथा डराने वाला बनाकर भेजा है। आपको तो सारे लोगों के लिए बशीर व नज़ीर बनाकर भेजा है। (३४:२८) आप सर्वश्रेष्ठ आचरण वाले है। (६८:४) आपको हमने करुणा पात्र बनाकर भेजा है।" (२१:१०७)

आप की आख़िरत दुन्या के मुकाबले में कहीं ज़ियादा अच्छी है। (वहां तो) आप का रब आपको इतना देगा कि आप खुश हो जाएंगे। (६३:४,५) एलान किया कि जो भी अल्लाह और उसके रसूल की पैरवी करेगा वह बड़ी सफलता पाएगा। (३३:७१) फरमाया "जिसने रसूल की पैरवी की उसने अल्लाह की पैरवी की।" (४:८०) निःसन्देह अल्लाह तआला सबके रब हैं, रहमान हैं, रहीम हैं। (१:१,२) उन्होंने अपनी रहमत ही से अपने प्यारे नबी को इस प्रकार बनाया कि हमको कष्ट होता तो उनको दुख होता है उनको तो लालच इस बात का है कि हम को लाभ पहुंचे वह ईमान वालों पर बड़े ममता मय तथा दयालु हैं। (९:१२८) घोषित कर दिया कि जो लोग अल्लाह से उम्मीद रखते हैं और आख़िरत के दिन पर विश्वास रखते हैं उनके लिए रसूल के जीवन में आदर्श है। (३३:२१) प्रिय रसूल को रब ने आदेश दिया कि आप कह दीजिये कि ऐ लोगो यदि तुम परमेश्वर (अल्लाह) से प्रेम रखते हो तो मेरा अनुकरण करो फिर तो अल्लाह के चहीते हो जाओ गे और अल्लाह तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा, अल्लाह तआ़ला तो बड़े दयालु महाकृपालु हैं। (३:३१) रब्बुलआ़लमीन खुद एलान करता है कि : आपको आपका रब रातों रात मस्जिदे हराम (मक्का मुकर्रमा) से मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मुक़द्दस) ले गया। (१७:१) फिर हदीसों के मुताबिक

तमाम अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम का इमाम बनाया फिर आसमानों पर बुलाकर नाना प्रकार की निअ़मतों से नवाज़ा। आप की उम्मत को पंज वक्ता नमाज़ का उपहार दिया। आपको हमने अन्तिम नबी (सन्देष्टा) बनाकर भेजा। (३३:४०) आप पर हमने अपनी निअ़मतें (पुरस्कार) पूरी कर दीं। अतः आप (स०) ने एलान कर दिया कि मेरे पश्चात कोई नबी नहीं। सृष्टि रचयिता ने सबसे पहले आप के नूर को पैदा किया। ह़ज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम में जब प्राण डाले गये तो उन्होंने अ़र्श के पायों पर लाइलाह इल्लल्लाहु मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह लिखा देखा। अल्लाह तआला ने आपको अन गिनत मुअ़जिज़ात अ़ता फ़रमाए । मुअ़जिज़ा किसी नबी से प्रकट होने वाली अद्भुत लीला को कहते हैं। सब से बड़ा मुअ़जिज़ा आप का आप पर अल्लाह की किताब का उतरना है कि उसकी एक सूरत के बराबर भी दुन्या के लोग न बना सकें हैं न बना सकते हैं। दूसरा बड़ा मुअ़जिज़ा मिअ़राज की घटना है कि एक ही रात में ह़रमे मक्की (मक्के) से बैतुल मुक़द्दस गये वहां से आसमानों पर गये। ज़न्नत, दोज़ख़ के दृश्य देखे अल्लाह तआ़ला से बातें कीं, सब नबियों से मुलाकातें कीं (अ़लैहिमुस्सलाम) और रात ही में अपने घर लौट भी आये।

एक बड़ा मुअ़जिज़ा आप का यह है कि चान्द की ओर उंगली से संकेत किया तो उसके दो टुकड़े अलग अलग हो गये जिसे लोगों ने अपनी आंखों से देखा। यह मुअ़जिज़े हदीस की मशहूर किताबों में लिखे हैं। इब्नि अबी शैबा ने रिवायत किया है कि ख़ुबैब बिन फ़िदैक की आंखों में फुल्ली पड़ गई और बिल्कुल अन्धे हो गये आँ ह़ज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनकी आंखों पर दम किया उसी समय उनकी आंखें अच्छी हो गईं और ऐसी अच्छी हुईं कि अस्सी बरस की आयु तक वह सुई में धागा डाल लेते थे। बुख़ारी व मुस्लिम में ह़ज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की रिवायत में है कि हुदैबिया में १५०० मुसलमान हुजूर के साथ थे, कुंए का पानी ख़त्म हो गया लोगों को वुजू भी करना था और पीना भी था। केवल एक लोटे में हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के वुजू के बाद बचा हुआ थोड़ा पानी था। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसमें अपना मुबारक हाथ डाल दिया बस आप की उंगलियों से पानी उबलने लगा जिससे १५०० लोगों ने पिया भी और वुजू भी किया रावी का कहना है कि लाख आदमी होते तब भी सब को पानी मिल जाता।

बुखारी व मुस्लिम में ह़ज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की रिवायत में है कि ग़ज़व–ए–ख़न्दक के मौक़े पर ह़ज़रत जाबिर ने एक बकरी ज़ब्ह़ की और साढ़े तीनसेर (एक साअ़) जौ का आटा तैयार किया और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से चुपके से कहा कि थोड़े आदमी लेकर मेरे घर चल कर खाना खा लीजिए। उस समय एक हज़ार का लशकर हुजूर के साथ था आप ने सब को खाने पर चलने की दावतें दे दी और जाबिर (रज़ि) से फ़रमाया कि हान्डी चूल्हे पर से न उतारना, न रोटी पकाना जब तक मैं आ न जाऊं। फिर आप जाबिर के घर पहुंचे और गूंधे आटे में तथा सालन की हान्डी में अपना मुबारक थूक थोड़ा थोड़ा मिला दिया। आदेश दिया कि अब रोटी पकाओ और चूल्हे ही पर से शोरबा निकाल कर देते रहो। ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) का कहना है कि वह हज़ार आदमी थे सब ने पेट भर खाया और हमारा खाना उसी तरह रहा कम न हुआ।

बुखारी व मुस्लिम में ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में एक बार सूखा पड़ गया। एक दिन आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जुमे का ख़ुत्बा दे रहे थे कि एक दीहाती ने खड़े होकर कहा ? या रसूलल्लाह माल हलाक (नष्ट) हो गया और बाल बच्चे भूखों मर रहे हैं आप पानी बरसने की दुआ़ कीजिए। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दोनों हाथ उठाए उस वक़्त आसमान पर बादल का कोई टुकड़ा भी न था। अचानक हर

शेष पृष्ठ ८ पर

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

मुसाफ़िरों और मेहमानों के साथ बर्ताव

वब्निस्सबील (अन्निसा : ३६) और मुसाफ़िरों के साथ नेकी करो।

मुसाफ़िर जो अपने बीवी बच्चों, मित्रों, अ़ज़ीज़ों तथा सम्बन्धियों और धन दौलत से अलग होकर सफ़र करते हैं, कभी ऐसा होता है कि उनके पास खाने के लिए खाना, ओढ़ने के लिए चादर और सफ़र के लिए खर्च भी नहीं होता है। उनके साथ भलाई करना, उनके आराम की फ़िक्र करना मुसलमानों के लिए ज़रूरी है।

मुसाफ़िर मेहमान हो या न हो, अमीर हो या गरीब हो, सब के साथ भलाई करना चाहिए। हज़रत उम्मे शरीक (रज़ि०) एक धनवान सहाबिया थीं। उन्होंने अपने घर को मेहमान ख़ाना (अतिथि गृह) बना दिया था। हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास जो मेहमान (अतिथि) आते थे वह अधिकांश उन्हीं के यहां ठहरते थे।

हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स ख़ुदा और क़ियामत के दिन पर ईमान लाया है उसको चाहिए कि अपने मेहमान की इ़ज़्ज़त करे। एक ह़दीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर के पास गये और फ़रमाया कि मुझे खबर मिली है कि तुम रात भर नमाज़ पढ़ते हो और दिन को रोज़ा रखते हो। उन्होंने कहा हां यह सत्य है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाय कि ऐसा न करो। नमाज़ भी पढ़ो और सो कर आराम भी करो, रोज़ा भी रखो और बेरोज़ा भी रहो क्योंकि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे जिस्म का भी ह़क़ है, तुम्हारी आंख का भी ह़क़ है, तुम्हारे मेहमानों का भी ह़क़ है और तुम्हारी बीवी का भी ह़क़ है।

फरमाया जो शख़्स ख़ुदा और क़ियामत के दिन पर ईमान लाया है उसको चाहिए कि वह मेहमान को आदर व सम्मान के साथ उसको पुरस्कारित करे।

पूछा गया कि उसका पुरस्कार क्या है?

फरमाया कि एक दिन और एक रात मिला कर मेहमानी तीन दिन की है। इस के आगे मेहमान पर दान (सदक़ा) होगा।

विधवाओं के साथ बरताव

" व अन्कि ह़ुल अयामा मिन्कुम" (अन्नूर :३२)

अपने में से बेवाओं का निकाह करो।

वह औरतें जिन के शौहरों का इन्तिक़ाल हो गया है अब वह बे यार व मददगार हैं, न उनके खाने पीने का कहीं सहारा है न रहने और सिर छुपाने का कहीं ठिकाना है । इस्लाम का हुक्म है कि उनके साथ नेकी का बरताव किया जाए। हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया बेवा और मिस्कीन के लिए दौड़ धूप करने वाला ऐसा है जैसा ख़ुदा की राह में दौड़ने वाला। फ़रमाया बेवा और ग़रीब के लिए दौड़ धूप करने वाला ख़ुदा की राह के मुजाहिद की तरह है और उसके बराबर है जो दिन भर रोज़ा और रात भर नमाज़ पढ़ा करे। कुछ लोग मूर्खता से बेवा औरतों को मनहूस (अशुभ) समझते हैं यह इस्लामी शिक्षा के विरुद्ध है। हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तो फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन मैं सब से पहले जन्नत का दरवाज़ा खोलूंगा तो देखूं गा कि एक औरत मुझ से भी पहले जन्नत में जाना चाहती है। मैं पूछूं गा कि तू कौन है ? वह कहेगी मैं एक बेवा हूं जिसके चन्द नन्हे यतीम बच्चे थे।

बेवा औरतों के साथ ज़रूरी बरताव यह भी है कि अगर वह राज़ी हों तो इद्दत गुज़र जाने के बाद किसी अच्छे आदमी के साथ उनका निकाह कर दिया जाए। हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पच्चीस बरस की उम्र में चालीस बरस की अधेड़ बेवा हज़रत खदीजा (रज़ि०) से शादी की। उनके पश्चात समय समय से हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने आठ बेवा औरतों से निकाह किया।

न घबरा जोशे तूफां से,
ख़ुदा पे छोड़ कश्ती को।
पहुंच ही जाएंगे ऐ दिल,
अगर क़िस्मत में साहिल है।।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

अल्लाह और उसके रसूल की महब्बत सृष्टि से अधिक हो।

८२. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : तीन बातें जिसके अन्दर होंगी उसको ईमान की मिठास का अनुभव होगा। एक तो यह कि अल्लाह और उसके रसूल की महब्बत सारी सृष्टि (मख़लूक़) से अधिक हो। दूसरी बात यह है कि वह किसी से महब्बत करे तो सिर्फ अल्लाह के लिए महब्बत करे। तीसरी बात यह कि कुफ़्र की तरफ़ वापस होना– जिससे अल्लाह ने उसको बचाया है– उतना ही ना पसन्द हो जितना आग में डाला जाना ना पसन्द है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

जिस से महब्बत हो उसको बता दे।

८७. हज़रत मिक़दाम बिन मअ़दी कर्ब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब आदमी अपने किसी भाई से महब्बत करे तो उसको चाहिए कि उससे बता दे कि मैं तुम से महब्बत करता हूं। (अबूदाऊद तिर्मिज़ी)

इससे अच्छा प्रभाव पड़ता है।

मुसलमान सम्मान योग्य है।

८८. हज़रत इब्नि अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत (वर्णित) है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने योमे नह्र (१० ज़िलहिज्जा) को लोगों के सामने तकरीर फ़रमाई (भाषण दिया) (उस तकरीर में) आप ने लोगों से पूछा कि आज कौन सा दिन है? लोगों ने जवाब दिया यह सम्मान वाला दिन है। फिर आप ने लोगों से पूछा कि यह कौन सा नगर है? लोगों ने जवाब दिया यह सम्मान वाला नगर है। फिर आप ने पूछा यह कौन सा महीना है ? लोगों ने उत्तर दिया "यह सम्मान वाला महीना है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम्हारा खून, तुम्हारा माल, तुम्हारी आबरू इस दिन, इस नगर और इस महीने ही की भांति सम्मान वाली हैं। इस बात को बार बार फ़रमाया फिर सर उठाया और कहा : ऐ अल्लाह मैं ने तेरा पैग़ाम पहुंचा दिया, ऐ अल्लाह मैं ने तेरा पैग़ाम पहुंचा दिया। बार बार कहा हज़रत इब्नि अ़ब्बास ने फरमाया : ख़ुदा की क़सम उम्मत के नाम यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वसीयत है। जो मौजूद है उसको चाहिए कि ग़ाइब को वसीयत पहुंचा दे। तुम हमारे बाद काफ़िर न हो जाना कि एक दूसरे की गरदन मारो। (बुख़ारी)

अल्लाह की किताब हमारे लिए आदर्श है।

८९. हज़रत यज़ीद बिन शरीक से रिवायत है कि मैंने हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अन्हु को मिम्बर पर खुत्बा देते देखा। मैंने आपको फ़रमाते हुए सुना। ख़ुदा की कसम अल्लाह की किताब के सिवा हमारे पास और कोई किताब नहीं है जिसको हम पढ़ें और हां जो इस लेख में हैं फिर उसको खोला तो उसमें दियत (क़त्ल पर दिया जाने वाला जुर्माना) में दिये जानेवाले ऊंटों की उम्रों का बयान था और बहुत से ज़ख्मों के तावान का उल्लेख था (अर्थात कोई किसी को अकारण ज़ख़्मी कर दे तो कैसे ज़ख़्म पर क्या तावान होगा।) और यह था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि किसी का ज़िम्मा (दायित्व) लेने में तमाम मुसलमान बराबर हैं। उनका एक छोटा आदमी भी ज़िम्मा ले सकता है। जिसने किसी मुसलमान से बदअ़हदी (विश्वास घात) की उस पर, खुदा की, फिरिश्तों की और तमाम लोगों की लानत है। क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला उसके किसी फ़र्ज़ व नफ़्ल को क़बूल नहीं फ़रमाएंगे। (मुस्लिम)

मोमिन, मोमिन का मददगार है।

९०. हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया : मोमिन, मोमिन के लिए दीवार की तरह है कि उसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से को मज़बूत तथा दृढ़ करता है। (बुख़ारी)

इबादत है यह और तक़ाजाए ईमां।
कि दुन्या में काम आए इन्सां के इन्सां।।

जुमुअः (जुमा) हफ्ते की ईद

मौलाना सय्यिद अबुल हसन अ़ली हसनी

जुमा के दिन जुह्र की नमाज़ के बजाय जुम्अ़े की विशिष्ट नमाज़ होती है वक़्त इसका वही है जो जुह्र का है इसमें एक तरफ़ तो यह कमी कर दी गई है कि चार रकअ़त के बाजय दो रकअ़त होती हैं दूसरी तरफ़ यह बढ़ोत्तरी है कि नमाज़ से पहले खुत्बा होती है और नमाज़ जहरी होती है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है –

अनुवाद – "ऐ ईमान वालो जब जुम्अ़े के दिन अज़ान कही जाये तो नमाज़ के लिए चल पड़ा करो। अल्लाह की याद की तरफ़ और क्रय–विक्रय छोड़ दिया करो, यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है अगर तुम समझ रखते हो।" (सूरः जुमुअः–९)

हदीस में है –

अनुवाद – " जो तीन जुमुअ़े सुस्ती और आलस में छोड़ देता है, अल्लाह उसके दिल पर मुहर लगा देता है।" (मुस्लिम)

जुम्अ़े की नमाज़ के लिए नहाने, दातून करने, खुशबू लगाने और अधिक से अधिक पवित्रता की व्यवस्था करने का हुक्म दिया जाता है। हमारे नबी सल्ल० जो खुत्बा देते थे जो सम्बोधन करते थे उसमें जीवन की वास्तविकताएं साफ़ झलकती थीं।

खुत्बे को बहुत ख़ामोशी और गम्भीरता के साथ सुनने का हुक्म है ताकि उसका भरपूर लाभ प्राप्त किया जा सके। खुत्बे के दौरान बात चीत की सख़्त मनाही है, यहां तक कि अपने पास बैठे हुए आदमी को बातचीत करने से रोकना भी मना है। हदीस में आता है कि "जिसने जुमुअ़ः के दिन अपने साथी से कहा कि खामोश रहो उसने भी ज़ाइद और फुजूल बात की।"

एक अ़रबी खुत्बे का अनुवाद

भारत में अधिक लोकप्रिय और प्रचलित एक अरबी खुत्बे का अनुवाद यहां नमूने के तौर पर प्रस्तुत किया जा रहा है–

अनुवाद– 'हम्द व सलात के बाद," लोगो ! तौहीद को इख़्तियार करो (अल्लाह को एक समझो और उसके साथ किसी को शरीक न समझो) इसलिए कि तौहीद खुदा की सबसे बड़ी फ़रमाबर्दारी और सबसे प्रिय अमल है। हर काम में अल्लाह से शर्म व लिहाज़ करो इसलिए कि शर्म व लिहाज़ लज्जा व भय की आदत तमाम नेकियों की बुनयाद है। अल्लाह के रसूल ह० मुहम्मद सल्ल० के आचरण को (सुन्नत) मज़बूत पकड़ो, इसलिए कि सुन्नत, पर चलकर आदमी आज्ञाकारी बनता है। और जो अल्लाह व रसूल की बात मानेगा वह सीधी राह का राही और लक्ष्य को प्राप्त करने वाला होगा। दीन में जो नई नई बातें निकाली गई हैं (बिदअ़त) उनसे दूर रहना, इसलिए कि इससे गुमराही में पड़ जाओगे। अपने पूरे जीवन में सत्यमार्ग अपना लो क्योंकि सच्चाई में मोक्ष और झूठ में तबाही है। भलाई और नेकी को अपने जीवन में उतारो इसलिए कि अल्लाह को नेकी करने वाले प्रिय हैं। अ़ल्लाह की रहमत से कभी निराश मत हो क्योंकि वह तमाम रहम करने वालों में सबसे ज़ियादह रहम करने वाला है। मायाजाल में न फंस जाना कि सब कुछ खो बैठो। देखो किसी को तब तक मौत नहीं आ सकती जब तक कि उसको उसके हिस्से की रोज़ी न पहुंच जाए, इस लिए हराम व नाजाइज़ रोज़ी कमाने का प्रयास निरर्थक है। अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए साधन भी अच्छे अपनाओ। अपने कामों में खुदा पर भरोसा रखो। इसलिए कि उसको अपने ऊपर भरोसा करने वालों का बड़ा ध्यान है। दुआ़ में कमी न करो इसलिए कि खुदा सबकी सुनता है और सब की झोली भरता है उससे अपने गुनाहों की बख्शिश चाहते रहो। इससे तुम्हारे माल व औलाद में बरकत होगी। कुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है :

"तुम्हारे परवरदिगार ने कह दिया है कि मुझ से मांगो मैं दूंगा। बेशक जिन लागों को मेरी बन्दगी इख़्तियार करने से अभिरूचि है और उनकी शान को बट्टा लगता है वह नरक (जहन्नम) में अपमानित होकर जायेंगे।" (सूरः मोमिन – ६०)

अल्लाह हमको और तुमको कुरआन की दौलत अधिकाधिक प्रदान करे और हमको और तुमको कुरआन की आयतों और उसके उपदेशों से लाभ पहुंचाये। मैं अपने लिए, तुम्हारे लिए और तमाम ईश्वरीय संविधान पर चलने वालों के लिए खुदा की रहम की दुआ़ करता हूं, तुम भी उस से क्षमा

याचना करते रहो, बेशक वह बड़ा क्षमा करने वाला और बड़ा रहम करने वाला है।

नमाज़ें विभिन्न हैं और नमाज़ियों के मर्तबे भी विभिन्न

कुरआन मजीद में नमाज़ों का उल्लेख दो प्रकार से आता है एक का बुराई के साथ दूसरे का अच्छाई के साथ। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है :

अनुवाद – "सो बड़ी ख़राबी है ऐसे नमाज़ियों के लिए जो अपनी नमाज़ को भुला बैठते हैं (और) जो ऐसे हैं कि आडम्बर करते हैं और छोटी–छोटी (तुच्छ) चीज़ें तक रोके रहते हैं।" (सूरः माऊन ४–७)

दूसरे प्रकार का उल्लेख करते हुए इरशाद होता है –

अनुवाद – "निश्चय ही (वह) मोमिन कामयाबी पा गये जो अपनी नमाज़ में नम्रता रखने वाले हैं।" (सूरः मूमिनून १–२)

इसी प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने भी दो प्रकार की नमाज़ों का उल्लेख किया है – एक नम्रता, विनय और तन्मयता वाली नमाज़ और एक ग़फ़लत व लापरवाही वाली नाक़िस नमाज़। अल्लाह के रसूल ह० मुहम्मद सल्ल० ने फ़रमाया, "जो मुसलमान भी अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर खड़े होकर दो रकअ़त नमाज़ अदा करता है, और अपने दिल और चेहरा दोनों के साथ नमाज़ में तल्लीन रहता है। तो उस पर जन्नत वाजिब हो जाती है।" दूसरे प्रकार की नमाज़ के बारे में फ़रमाया, "आदमी नमाज़ से फ़ारिग़ भी हो जाता है और उसको उस की नमाज़ का मात्र दसवां भाग नसीब होती है और कभी–कभी नवां, आठवां, सातवां, छठा, पांचवां, चौथाई, तिहाई और आधा।"

अल्लाह के रसूल ह० मुहम्मद सल्ल० की नमाज़ सर्वोत्कृष्ट थी, हज़रत अबूबक्र की नमाज़ किसी दूसरे की नमाज़ की अपेक्षा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नमाज़ से सबसे ज़ियादा मिलती–जुलती और करीब थी, इसीलिए हुक्म फ़रमाया। लोगों के मर्तबे का सही अन्दाज़ा जितना नमाज़ से हो सकता है उतना किसी और चीज़ से नहीं हो सकता। नमाज़ ही वह सहीह पैमाना है जिस पर इन्सान के दीन का और इस्लाम में उसके मक़ाम का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

(पृष्ठ ४ का शेष)

ओर से पहाड़ों की भांति बादल घिर आए आप (सल्ल०) अभी मिम्बर से उतरने भी न पाए थे कि वर्षा से आप की दाढ़ी से पानी की बून्दें गिरने लगीं। फिर अगले जुमे तक बारिश होती रही, इस जुमे में उसी दीहाती या किसी दूसरे ने खड़े हो कर कहा कि मकानात गिर पड़े माल डूब गया। दुआ कीजिए कि पानी रुक जाए। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हाथ उठाकर दुआ की : ऐ अल्लाह हमारे गिर्द बरसे हम पर न बरसे और जिधर आप ने हाथ से संकेत किया बादल छंट गये। इस प्रकार मदीने पर पानी बरसना रुक गया मगर उसके गिर्द बरसता रहा।

तिर्मिज़ी ने हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत नक़्ल की है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ मक्के में एक बार पहाड़ों के बीच से गुज़रना हुआ तो जिस पहाड़ या दरख़्त के सामने से आपका गुज़र होता उससे आवाज़ आती अस्सलाम अ़लैकुम या रसूलल्लाह।

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मस्जिद में खुत्बा देते वक्त खजूर के एक खम्बे से तक्या लगा लेते थे। जब मिम्बर बन गया तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मिंबर पर खुत्बा पढ़ना शुरू किया। उस वक्त वह खजूर वाला खम्बा चिल्ला कर ऐसे रोने लगा कि लगता था कि फट जाएगा। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिंबर से उतरे और उस खम्बे को अपने से चिम्टा लिया। खजूर का खम्बा बच्चों की तरह सिसक सिसक कर अपना रोना रोकने लगा यहां तक कि चुप हो गया।

हज़रत अबू हुरैरा से (रज़ि०) रिवायत है कि मैं जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में कुछ खजूर लाया और अ़र्ज़ किया कि इन खजूरों में बरकत कर दीजिए आप ने दुआ की और फ़रमाया कि इनको अपने तोशेदान में रख लो और जब चाहो उसमें से हाथ डाल कर निकाल लो लेकिन तोशादान कभी उलट कर झाड़ना नहीं। हज़रत अबू हुरैरा फ़रमाते हैं कि मैंने उसमें से इतने इतने वसक़ अल्लाह की राह में खर्च किये। (एक वसक़ लगभग एक कुन्टल ६० किग्रा) और उसमें से खाते और खिलाते रहे। वह तोशादान हमारी कमर से लटका रहता था लेकिन अफसोस कि हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु, अ़न्हु की शहादत के दिन मेरी कमर से खुलकर कहीं गिर गया। सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही वसल्लम।

मदरसों के सामने आने वाली समस्याएं और उनका हल

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा व अध्यक्ष मुस्लिम परसनल्ला बोर्ड के विचार

अमीनुद्दीन शुजाउद्दीन

प्रश्न : आपके विचार में मदरसों के विरुद्ध साज़िशों और आरोपों के पीछे कौन से कारक, प्रेरक तत्व और उद्देश्य हो सकते हैं? अंतर्राष्ट्रीय शक्तियां मदरसों को अपने लिए क्यों ख़तरा समझ रही हैं? मदरसों के विरुद्ध आन्दोलन को क्या हमारे धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों के ख़िलाफ़ एक योजनाबद्ध और दूरस्थ संघर्ष क़रार दिया जा सकता है?

उत्तर : इन दिनों मदरसों को जिन समस्याओं का सामना है उनके कारणों का पता लगाना और उन कारकों और प्रेरक क्रिया कलापों को समझने के लिए हमें इतिहास को सामने रखना चाहिए।

यूरोपीय देशों और उनके सामने के मुसलमान राज्यों के बीच युद्ध का एक क्रम चलता रहा था जो सलीबी युद्ध के नाम से जाना जाता है। मुसलमानों की तरफ़ से तुर्की की उस्मानी सरकार को यूरोप की युद्ध प्रिय कौमों से मुक़ाबला करना होता था जिस में बराबर तुर्की को विजय प्राप्त होती रही थी और यूरोपीय शक्तियां बराबर प्रास्त होती रहीं जिसने यूरोप की क़ौमों के दिलों और ज़ेहनों में मुसलमानों को अपना दुश्मन समझने का न समाप्त होने वाला एहसास पैदा कर दिया। चुनानचः जब तुर्की और दूसरे इस्लामी देश राजनीतिक और शैक्षिक दृष्टिकोणसे कमज़ोर हुए और संस्कृति और शासन में यूरोप को उन्नति प्राप्त हुई तो यूरोप ने मुसलमान पूर्वी देशों पर एक के बाद दूसरे पर कब्ज़ा जमालिया और शैक्षिक व सांस्कृतिक लिहाज़ से उन देशों पर अपना दबदबा क़ायम कर लिया और आप जानते हैं कि जब किसी क़ौम की किसी देश पर हुकूमत क़ायम होती है तो केवल अधिकार ही नहीं आता बल्कि अधिकार के साथ–साथ उस क़ौम की सभ्यता और उसकी प्रमुख विचारधारा भी आती है। चुनानचः यूरोप का जहां जहां क़ब्ज़ा हुआ वहां वहां उनके शासकों ने अपने विशेष सांचे में ढली हुई शिक्षा प्रणाली भी प्रचलित की। उनके इस शिक्षा व्यवस्था की रूह इस्लाम दुश्मनी पर निर्धारित थी। फलस्वरूप मुसलमानों की नस्लें इस्लाम की महानता को और इंसानियत के सम्मान और शिक्षा की विशेषताओं को सन्देह की दृष्टि से देखने लगीं और इसप्रकार उनमें यह हीन भावना पैदा हुई कि इस्लाम समय का साथ नहीं दे सकता और वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता नहीं रखता और इसी प्रकार यूरोपीय देशों ने अपनी शिक्षा प्रणाली की राह से नई नस्लों के दिल व दिमाग़ को इस्लाम से विमुख करके यह समझा कि इस हथियार से हमने अपने दुश्मन को बेबस कर दिया है। शिक्षा प्रणाली के अतिरिक्त उन्होंने साहित्य और संचार माध्यमों के द्वारा इस्लाम के विरुद्ध विचार धारा पैदा करने का कार्य किया। यूरोपीय मुस्तशिरक़ीन (Orientalist) ने मुस्लिम दुश्मनी और इस्लाम दुश्मनी के विचार अपने लेखों में शामिल कर दिये। इसके अतिरिक्त सलीबी युद्धों के पीछे जो विचार काम कर रहा था वह यूरोपीय बुद्धिजीवियों के एक विशेष वर्ग में निरंतर क़ायम रहा। इस्लामी विचारकों के लिए यह परिस्थिति अत्यंत चिंता जनक और ध्यान आकृष्ट करने का कारण थी और उनकी जिम्मेदारी थी कि वह इस विरोधी सभ्यता व विचार के आक्रमण को रोकें और इस्लाम के सन्देश को संसार के सामने लाएं। इसके नतीजे में अलहमदुलिल्लाह ऐसा लिट्रेचर अनेक इस्लामी विचारकों के क़लम से सामने आया जिसने इस्लाम से विमुख नस्ल में इस्लामी एहसास और चेतना पैदा की। उनमें आत्मसम्मान की भावना उत्पन्न हुई, गत महानता को पुनः प्राप्त करने की लगन पैदा हुई। दूसरी तरफ़ इस्लामी शिक्षा से नई नस्ल को लाभान्वित करने का काम इन मदरसों द्वारा पूरा किया गया जिन्होंने इस्लामी ज्ञान की तालीम द्वारा इस्लामी शरीअ़त (नियम) और शिक्षक और विद्वान तैयार किये। उनकी संख्या यद्यपि आवश्यकता से कम रही लेकिन अपनी कम संख्या के बावजूद उन्होंने मुसलमानों का इस्लामी शिक्षा से सम्बन्ध क़ायम रखा और ऐसे उलमा भी पैदा किये जिन्होंने इस्लाम की पिछली महानता को वापस लाने और इस्लाम दुश्मनों पर पड़ा हुआ परदा उलटने का काम किया।

इन दोनों पहलुओं से की गई कोशिशों से इस्लामी महानता के वापस आने की आशाएं महसूस की जाने लगीं और बीसवीं सदी के समाप्त होते होते यह एहसास होने लगा बल्कि कहा जाने लगा कि आने वाली इक्कीसवीं सदी खुदा ने चाहा तो इस्लाम की सदी होगी। इस्लामी विचारों के इस प्रचार का भी यूरोप ने चिन्ता की दृष्टि से देखा और उसे यह एहसास हुआ कि इस दशा में तो इस्लाम और मुसलमान दोबारा शक्ति प्राप्त करके यूरोप की सभ्यता और श्रेष्ठता के लिए चैलेंज बन सकते हैं। चुनानचः जहां जहां मुसलमानों में जोश और इस्लामी आत्म सम्मान का प्रदर्शन हुआ, वहां उनको सख्ती से कुचला गया। इसकी मिसाल बूसेनिया और चेचीनिया में किये गये अत्याचारों में मिलती है।

इन देशों में मुसलमानों पर जो जुल्म व अत्याचार किये गये उससे मुसलमानों में संताप और क्रोध पैदा हुआ। उनमें अपने सहधर्मी भाइयों की मज़्लूमियत व बेबसी का एहसास जागना स्वाभाविक था। इनका आत्मसम्मान जाग्रति हुआ। इस जाग्रण को देखते हुए इसे निशप्रभावी बनाने के लिए यूरोप ने योजना बनाई, प्लानिंग (**Planning**) की और यूरोप को, अपने सर्वेक्षण से, यह एहसास पैदा हुआ कि मुसलमानों के इस चेतना के ज़िम्मेदार मदरसे हैं।

अतः मदरसे उनकी निगाहों में बुरी तरह खटकने लगे। वह इस्लामी मदरसों की अपनी राह का रोड़ा समझने लगे लेकिन चूंकि क़ानूनी और संवैधानिक रूप से मदरसों को समाप्त कर देना सम्भव नहीं हो सकता अतः उन्होंने मदरसों के विरुद्ध नकारात्मक विचार बनाने की योजना बनाई। मदरसों पर झूठे आरोप लगाना प्रारम्भ कर दिया गया। बिना किसी प्रमाण के उन्हें आतंकवाद का केन्द्र कहा गया और ऐसे प्रोपगंडे किये गये ताकि मदरसों और दीन प्रिय लोगों की तस्वीर बिगड़ जाए और उनके विरुद्ध नफ़रत जनता में फैल जाए।

इस विषय पर बात करते समय यह बात भी हमारे सामने होनी चाहिए कि कुछ पाकिस्तानी मदरसों से शिक्षा प्राप्त करने वाले नौजवानों की तरफ़ से इस्लाम दुश्मन शक्तियों के विरुद्ध लड़ने का जो उत्साह पैदा हुआ उसको मदरसों की दुश्मनी का आधार बनाया गया हालांकि इस के पीछे अमरीका का ही हाथ था। तालिबान को अमरीका ने अपने उद्देश्य पूर्ति के लिए विशेष सहायता दी थी और उनके जोश और उत्साह द्वारा अपने विरोधी रूस की शक्ति को तोड़ा था। यह सत्य सबको मालूम है अलबत्ता फ़िलिस्तीन में इस्राईलियों को समरथन देने और अफ़ग़ानिस्तान में इस्लाम पसन्द शक्तियों के साथ अत्याचार व जुल्म से सामान्य मुसलमानों में अमरीका के विरुद्ध क्रोध पैदा हुआ।

भारतीय सरकार को यह ग़लतफ़हमी पैदा हुई कि हिन्दुस्तान के मदरसे किसी विरोधी राह पर न चल पड़ें हालांकि हिन्दुस्तानी मदरसों ने अपने देशवासियों के कंधे से कंधा मिलाकर साम्राजी शक्तियों को निकालने में बड़ा कारनामा अंजाम दिया था और पूरी कुर्बानी दी थी। वह अपने देश के ग़ैर मुस्लिम भाईयों की तरह बराबर देश के शुभचिन्तक रहे और मदरसों की पाठ्य पुस्तकों में, उनकी शिक्षा प्रणाली में कोई बात मुल्क व वतन दुर्भावना की नहीं पाई जाती। इसको सरकारी जांच संस्था ने भी जांच करके मालूम कर लिया है। लेकिन केवल इस डर से कि मदरसे इस्लाम की सर्वश्रेष्ठता के लिए कोई बड़ा कार्य सम्पन्न न करें, उन पर बिना प्रमाण आरोप लगाए जाते रहे जबकि यह एक दोषपूर्ण विचार और निराधार बात है। सरकार को चाहिए कि मदरसों के सम्बन्ध में निराधार भ्रांतियों को दूर कर ले।

रहा आपके प्रश्न के इस भाग का उत्तर कि क्या मदरसों के विरुद्ध आन्दोलन हमारे धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों के विरुद्ध एक योजनाबद्ध और दूरगामी परिणामों का वाहक है। स्पष्ट है कि हमारे दीन का अस्तित्व मदरसों से सम्बद्ध है और खुदा न करे मदरसों पर कोई बात आई तो इस संसार में एक नस्ल के बाद दीन के अस्तित्व की ज़मानत नहीं दी जा सकती लेकिन यह दीन क़ियामत तक बाक़ी रहने के लिए है और अल्लाह तआला मदरसों के द्वारा दीन की रक्षा और अस्तित्व का काम ले रहा है। हमको पूर्ण आशा है कि इन मदरसों को समाप्त नहीं किया जा सकेगा। अल्लाह तआला इन की रक्षा करेगा शर्त यह है कि इन मदरसों के लोग अपने सत्य के संदेश के लिए निःस्वार्थ भाव से काम करते रहें और अच्छे आचरण को अपनाए रहें और हिकमत व दूरदृष्टता से काम करते रहें।

प्रश्न : क्या मदरसों पर आरोप के पीछे भ्रांतियों का भी दख़ल हो सकता है?

उत्तर : इसमें प्रोपगण्डे का

दख़ल है। जैसे जिहाद ही की परिभाषा को लीजिए। जिहाद का शाब्दिक अर्थ अच्छे उद्देश्य के लिए दौड़ धूप करना लेकिन दुःख यह है कि इन दिनों जिहाद को केवल अपने दुश्मनों को मारने और क़त्ल करने के अर्थ में प्रयोग करके उसको अमानवीय व्यवहार क़रार दिया जा रहा है जबकि जिहाद का शब्द अपनी इच्छा को बुरे विचारों से बचने और इंसानियत को ग़लत मार्ग पर ले जाने वालों को उनके इस अमल से रोकने और सत्य के लिए कोशिश करने के अर्थ में आता है। जिहाद वास्तव में अच्छे उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करने का नाम है। वास्तव में जब ऐसी स्थिति पेश आजाए कि दूसरी तरफ़ से टकराव की नौबत हो या अत्याचार का सामना हो कि इस के लिए शक्ति प्रयोग करना ही हल हो तो इसका इख़तियार करना भी जिहाद है। लेकिन बुन्यादी तौर से इस सच्चाई को समझना चाहिए कि इस्लाम अमन व शान्ति का धर्म है। वह यदि शक्ति प्रयोग के साथ जिहाद करता है तो भी इसका उद्देश्य इंसानियत की ख़ातिर और अम्न व शान्ति पैदा करना होता है। इस्लाम अम्न की दावत देने वाला और शान्ति का सन्देश वाहक है। उसने अल्लाह की दावत का जो सिद्धांत बयान किया है उसे ही देख लीजिए। (कुर्आन मजीद में) फ़रमाया गया है।

अनुवाद – अपने रब के रास्ते की तरफ़ बुलाओ हिकमत और आसानी के साथ और उनसे वाद विवाद करो अच्छे ढंग के साथ।

हां यदि कोई व्यक्ति जिहाद के शब्द को ज़ुल्म व ज़ियादती के लिये प्रयोग करता है तो यह उस का ग़लत काम है। इससे इस शब्द को बदनाम नहीं किया जा सकता।

प्रश्न : इन भ्रांतियों को दूर करने का क्या उपाय हो सकता है ?

उत्तर : प्रोपगंडे के लिए जिन संचार माध्यमों का प्रयोग किया जा रहा है, हम भी उन संचार माध्यमों को सकारात्मक व रचनात्मक उद्देश्य के लिए प्रयोग पर ध्यान दें बल्कि समय की मांग यह है कि बड़े पैमाने पर हम संचार माध्यमों (**Media**) से काम लें और अपनी कोशिशों को लाभप्रद व कारगर बनाने का उपाय करें।

प्रश्न : इन आरोपों और आक्रमणों में मदरसों को क्या नीति अपनानी चाहिए?

उत्तर : इस सिलसिले की कूटनीति के कई पक्ष हो सकते हैं। जैसे :–

- मदरसों के कल्याणकारी स्वभाव तथा उद्देश्य से दूसरों को परिचित कराना चाहिए। बहुत बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है, जो मदरसों की वास्तविकता से परिचित ही नहीं हैं विशेषकर इन परिस्थितियों में जबकि नकारात्मक प्रोपगंडा हो रहा हो। इस सिलसिले में इस पर ध्यान देने की हमारी ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है।
- दूसरा पक्ष यह है कि हम अपने अक़ाइद (अस्थाओं) और उन नैतिक शिक्षाओं से भी देश के अन्य भाइयों को परिचित कराएं जो इंसानियत दोस्त और शांति प्रिय और इंसानों से सहानुभूति और इंसानियत के शुभचिन्तक हैं। इस प्रकार भ्रांतियां भी दूर होंगी और इस्लाम के गुणों से संसार परिचित भी होगा।
- हम इन्हें यह भी समझाएं कि अपनी नस्लों को अपने धर्म की शिक्षा देना हमारा संवैधानिक अधिकार है तथा मदरसों द्वारा शिक्षा देना, स्वयं सरकार की तरफ़ से इसे करने की ज़िम्मेदारी में एक भागीदारी है। इस प्रकार देश की कितनी बड़ी शिक्षा दीक्षा की आवश्यकता को ये मदरसे पूरा कर रहे हैं।
- तीसरा पक्ष यह है कि शासक वर्ग और सरकारी जिम्मेदारों से तथा राजनीतिक वर्ग से भी हम सम्पर्क रखें और उन्हें बताएं कि मदरसे क्या हैं। देश में अज्ञानता के विरुद्ध यह किस प्रकार ज्ञान की ज्योति रौशन किये हुए हैं। यदि उन्हें मदरसों के बारे में कुछ भ्रांतियां हैं तो मदरसों के अधिकारियों से मिलें और वस्तुस्थिति से जानकारी प्राप्त करें।
- चौथा पक्ष यह है कि हम अपने अंदरूनी प्रबन्ध को बिलकुल साफ़ सुथरा और कमज़ारियों से पाक रखें ताकि किसी को उंगली उठाने का अवसर न मिले।

प्रश्न : मुस्लिम परसनला बोर्ड के अस्थापना के पीछे अपने उद्देश्य हैं इसलिए इस का कार्य क्षेत्र भी सीमित है परन्तु मदरसों के सामने आनेवाली वस्तुस्थिति के पेशे नज़र क्या बोर्ड सचमुच और अमली दिलचस्पी लेगा?

उत्तर : इस सिलसिले में बोर्ड दिलचस्पी ले रहा है। मदरसों के सामने ख़तरों को देखते हुए बोर्ड ने इससे पहले कमेटी बनाई थी। वर्तमान में उसे फिर ध्यान दिलाया गया है । कुछ दिनों पहले कमेटी के कनवेनर मौलाना सलमान हुसैनी की देख रेख में एक सभा कटौली, मलीहाबाद में हुई थी और उसमें जो परस्ताव पास हुए थे

वह प्रेस में आ चुके हैं।

प्रश्न : तस्वीर का एक पहलू यह भी है कि सरकारी विभागों की तरफ से मदरसों के लिए बाहरी रूप से सहानुभूति का व्यवहार अपनाया जा रहा है जैसे उन्हें एड (**Aid**) देने की बातें होती हैं तथा मदरसों के पाठ्यक्रम को वर्तमान युग की मागों के अनुरूप बनाने की सलाह के साथ साथ इस प्रकार की सहायतायें भी दी जाती हैं। इस सिलसिले में आपकी क्या राय है?

उत्तर : प्रत्यक्ष में तो यह अच्छी बात है और अपने आप में अच्छी चीज़ें हैं परन्तु मदरसों के विरुद्ध सरकारी अधिकारियों के व्यवहार से यह संदेह भी किया जा सकता है कि उपरोक्त कोशिशें कहीं मदरसों की दिशा को परिवर्तित करने की कोशिश न हो। ऐसी कोशिश कि जिसके द्वारा मदरसों के पाठ्यक्रम में आधुनिक विषयों की मात्रा इतनी कर दी जाए कि दीनी और शरअ़ी विषयों के कोर्स को हानि पहुंचे। तो स्पष्ट है इसके द्वारा मदरसों से उनकी असल रूह निकल जाएगी।

सरकारी सहायता स्वीकार करने का यह प्रभाव पड़ना भी सम्भव हो सकता है कि मदरसों और उनके शैक्षिक प्रबन्ध में सरकारी अधिकार व हस्तक्षेप के हानिकारक प्रभाव का अवसर प्राप्त किया जाए। और मदरसों को उनके वास्तविक उद्देश्य से बहुत दूर कर दिया जाए। इस परिस्थित में तो हम कहेंगे कि बड़े मदरसे जो आर्थिक रूप से सुदृढ़ हैं वह सरकारी सहायता न लें ताकि उनमें हस्तक्षेप की संभावनाएं न पैदा हों।

प्रश्न : मदरसों के पाठ्यक्रम में कुछ परिवर्तन का सुझाव समय समय पर हमारे अपने सदभावक वर्ग की तरफ़ से भी आते रहते हैं। मदरसों में वर्तमान आधुनिक विषयों को पाठ्यक्रम में दाख़िल किये जाने के सिलसिले में श्रीमान के विचार से किन किन बुन्यादी बातों को ध्यान में रखना चाहिए ?

उत्तर : इस विषय में बहुधा विचार प्रकट करने की आवश्यकता पेश आती रहती है। नदवतुल उलमा की तहरीक का एक महत्वपूर्ण और बुन्यादी पहलू पाठ्यक्रम का सुधार भी था।

इस सिलसिले में बुन्यादी तौर पर यह बात समझ लेने की है कि आधुनिक विषयों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। एक भाग सामाजिक विषयों का है जैसे इतिहास, भूगोल आदि और दूसरी क़िस्म है भौतिक व वैज्ञानिक विषयों का। जहां तक सामाजिक विषयों का सम्बन्धा है तो ऐसे विषय आवश्यकतानुसार मदरसों के पाठ्यक्रम में अवश्य शामिल किये जाने चाहिए लेकिन इसका ध्यान ज़रूर रखना चाहिए कि ऐसे विषय इस्लामी रूह से खाली न हों। ऐसा न हो कि वे विषय, जिनका निर्माण यूरोप के संरक्षण में हुआ है जिसके कारण उनमें नास्तिकता की गंध पाई जाती है, उसे वैसे ही ले लेन में हमारे विद्यार्थियों पर इस का दुष्प्रभाव पड़े। आवश्यकता यह है कि इन विषयों को नये वांछित सांचे में ढाला जाये। उनके इस्लामीकरण का काम बहुत ही महत्वपूर्ण और अनिवार्य है। इन विषयों का अध्यन इन्सान को नास्तिक (मुलहिद) भी बना सकता है और मुसलमान इससे प्रभावित हो सकते हैं। इसलिए यह काम किया गया तो सार्थक ज्ञान की बड़ी सेवा होगी और इंसानी दुन्या पर बड़ा उपकार होगा।

रहे समाजिक और वैज्ञानिक विषय तो उनका महत्व और लाभ प्रमाणित है। इनको अवश्य हासिल करना चाहिए और उनके लिए स्कूल क़ायम करना चाहिए बल्कि सच पूछिये तो यह अल्लाह की शक्ति व सामर्थ्य को स्पष्ट करने वाले और इंसान के लिए खुद के पहचानने का साधन सिद्ध हो सकते हैं। इसलिए हम कहते हैं कि मुसलमानों के एक वर्ग को इसे फ़र्ज़ क़िफ़ायः (ऐसा कर्तव्य जो कुछ लोगों के कर लेने से बक़ी लोगों की तरफ़ से मान्य हो जाए) के तौर न केवल पढ़ना चाहिए बल्कि इन विषयों में कमाल हासिल करना चाहिए।

लेकिन जहां तक मदरसों के पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक विषयों को सम्मिलित करने का प्रश्न है तो इस सिलसिले में यह बात कहने की है कि मदरसों में इनकी प्रारम्भिक बातें तो पढ़ाई जा सकती हैं और उनसे मदरसों के विद्यार्थियों को अवगत भी होना चाहिए। मगर यह मांग कि इस सामाजिक और भौतिक विषयों को विस्तार के साथ मदरसों के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए उचित नहीं है और व्यवहारिक रूप से सम्भव भी नहीं है। क्या मेडिकल और इंजीनियरिंग शिक्षा एक साथ दी जा सकती है ? यदि नहीं दी जा सकती और ऐसा करना सम्भव नहीं है तो यह कैसे सम्भव हो सकता है कि मदरसे जो कुर्आन, हदीस, फ़िक़ह (धर्मशास्त्र) में विशेष योग्यता प्राप्त करने के लिए स्थापित किये गये हैं। वहां इन्हीं के साथ–साथ वैज्ञानिक विषय भी पढ़ाए जा सकें। मदरसों का बुन्यादी काम धार्मिक नियम

सम्बन्धी विषयों के विशेषज्ञ और उलमा पैदा करना है। यदि वह अपना बुन्यादी काम करना छोड़दें तो फिर इस सूरत में मदरसा ही क्यों रह जाएंगे ?

प्रश्न : इस्लामी मदरसों पर आरोपों के सम्बन्ध में श्रीमान शासकों से क्या कहना चाहेंगे?

उत्तर : जैसा कि मैंने कहा है कि शासक अपने भ्रम को दूर करें। हमारे मदरसे वह नहीं हैं जैसा कि वह समझ रहे हैं। वह स्वयं आएं और मदरसों को देख लें, उन्हें समझ लें। इन मदरसों में कदापि ऐसी शिक्षा नहीं दी जाती जिससे भारत के संविधान की अवहेलना होती हो या संविधान के विरुद्ध हो।

प्रश्न : शान्ति प्रिय और साफ़ ज़िहन रखने वाले देश के अन्य भाइयों से आप क्या कहना चाहेंगे ?

उत्तर : उनके ज़ेहन में जो भ्रम है उनको दूर करने के लिए हम संचार माध्यमों से काम लें। उनकी भाषा में और उन्हीं की शैली में उनको समझाने की कोशिश करें।

प्रश्न : अरबी मदरसों और उनके ज़िम्मेदारों से आप क्या कहना चाहेंगे?

उत्तर : मदरसों के ज़िम्मेदार सकारात्मक और गम्भीर काम पर अपना ध्यान केन्द्रित करें, इसका ध्यान रहे कि वह यह काम अल्लाह की प्रसन्नता के लिए कर रहे हैं। इसी ज़िहन को अपनाते हुए दीनी शिक्षा की सेवा करें तथा वह यह समझें कि दीन की मांगें क्या हैं और उम्मत को मज़बूत किस तरह बनाया जाए।

विशेषकर यह बात उनके ज़िहन में रहे कि वह अपने काम के बहुत अधिक प्रचार व प्रसार से बचें। इससे अकारण भ्रम पैदा होता है। उद्देश्य काम हो न कि एलान।

क़ानून को ध्यान में रख कर सतर्क रहें और कोई क़दम ऐसा न उठने पाए जिससे आरोप लगाने का किसी को कोई अवसर मिले। सार्वजनिक तथा संवैधानिक सिद्धान्तों के परिधि में रह कर काम करें।

मदरसों के ज़िम्मेदार अपने स्वार्थ लाभ से ऊपर उठकर सकारात्मक और अमली कामों की तरफ़ ध्यान दें तो इंशाअल्लाह उनको अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से सहायता प्राप्त होगी और उनका काम प्रभावी और लाभ प्रद होगा।

अनुवाद : हबीबुल्लाह आज़मी

नबी की नअ़त

आसी

प्रिय मुहम्मद प्रीतम प्यारे।
परमेश्वर के राज दुलारे ।।
अहमद भी कहलाए हैं वह ।
ईश संदेशा लाए हैं वह ।।
प्रीतम प्यारे सब से ऊंचे।
पर परमेश्वर से हैं नीचे।।
परमेश्वर को इनसे जाना।
उनसे फिर इन को पहचाना।।
नाम ईश का अल्ला ताला[1]।
अहमद उनका बन्दा प्यारा ।।
एक रात मिअ़राज गये वह
मानव के सरताज बने वह ।।
लाए वह उपहार वहां से।
पढ़ें नमाज़ें बन्दे मन से।।
उन पर तो कुर्आन है उतरा ।
नूरे हिदायत वह है सगरा।।
प्रेम ईश से जो है रखता।
वह है नबी के पीछे चलता।।
अपना प्रेम तू दे ऐ अल्ला।
अपने नबी का प्रेम भी मौला।।
नबी हमारे सब से उत्तम।
सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम।।

(१)अल्लाह तआला

बहारे मदीना

मजजूब

मुबारक ग़रीबुद्दयारे मदीना।
कि पेशे नज़र है मज़ारे मदीना।।
ख़िरामां हों ऐ मुश्कबारे मदीना।
कि दुन्या में फैले बहारे मदीना।।
हुआ मर के आख़िर गुबारे मदीना।
हज़ार आफ़रीं जां निसारे मदीना।।
मुझे ग़म नहीं लाख मन्ज़िल कठिन हो।
कि हैं पैशरो शहसवारे मदीना।।
हवाए मदीना मेरे दिल की ठन्डक।
मेरा नूरे दीदा गुबारे मदीना।
मुअ़त्तर किये देती है जान दिल को।
हवाए ख़ुशे मुश्कबारे मदीना।।
शरीके नफ़्स ऐ दिले ज़ार कर ले।
शिफ़ा है शिफ़ा है गुबारे मदीना।।
बरस्ते हैं दिन रात अन्वार दिल पर ।
अ़ज़ब है अ़ज़ब जलवा ज़ारे मदीना।।
कहां ऐसे दिन हैं कहां ऐसी रातें।
निराले हैं लैलो नहारे मदीना।।
है खुर्शीद ऐ शाहे लौलाक गोया।
हर इक जर्र–ए–ताब्दारे मदीना।।
बहुत दूर से शौक में आ रहा हूं।
दिखा दे रुख अपना निगारे मदीना।।
दिलो जां ज़रो माल, ख़्वेशो अक़रिब।
फ़िदाए मदीना निसारे मदीना।
खड़ा तक रहा हूं मैं रौज़े की जानिब।
दिखा दे झलक पर्दादारे मदीना।।
ख़ुशा ज़िन्दगानिये कूए मुहम्मद।
जिहे साकिनाने दयारे मदीना।।
निकलने न दे, मुझको अब ज़िन्दगीभर।
यहीं रोक ले ऐ हिसारे मदीना।।
बक़ीये मुक़द्दस में हो मेरा मरक़द।।
रहूं हश्र तक हम कनारे मदीना।।
न उजलत करो वक्ते रूखसत रफ़ीको।
कहां मैं कहां फिर दयारे मदीना।
मैं दिल में बसा लूं बहारे मदीना।।
जो था गिर्दे कअ़बा के मस्ती में रक्सां।
वह मजजूब है होश्यारे मदीना।।

तीसरी क़िस्त

महिला जगत

सुन्दर रहन सहन

(बच्चियों की तालीम व तरबियत)

ख़ैरुन्निसां 'बेहतर'

ससुराल
थोड़े दिन बतौर मेहमान के

ससुराल में तुम्हें जो बातें पेश आने वाली हैं वह मैं तुम्हें बताये देती हूं, और कारवाई भी, आशा है तुम इन्हें ध्यान में बिठा लोगी। जब तुम ब्याह के जाओगी तो तुम कुछ दिन मेहमान के तौर पर रहोगी। जो मिले खालो, जो पहनायें पहन लो, नाक भौं न चढ़ाओ, मुद्दत तक बिल्कुल घूंघट में न रहो कि घर की ख़बर न हो कौन आया और कौन गया और यह भी न हो कि जैसे कुछ बहुयें आते ही अपना काम करने लगती हैं, सास, नन्दों को कोई नहीं समझतीं, नतीजा यह होता है कि निगाहों में हल्की हो जाती हैं और धीरे धीरे सब किनारा कर लेती हैं। फिर कितनी ही मुश्किल पड़ जाये कोई मदद नहीं करता, स्व्यं ही भुगतती रहती हैं, तुम ऐसा कदापि न करना।

सास नन्दों से बर्ताव

अपने सास व ससुर को मां बाप की जगह पर समझो और नन्दों को सगी बहन समझो। तुम जो करो उनकी राय से करो। जो चीज़ तुम्हारे मौके से आये वह तुम अपनी सास नन्दों के पास भेज दो फिर वह जो करें तुम खुश रहो, जो कुछ तुम मां–बाप के पास से लाई हो वह सब सामान उन्हीं के मातहत रखो, कपड़ों के बक्स उनकी खुशी पाकर अपने पास रखो और देखती रहो। रोज़ के पहनने के कपड़े अलग रखो और नुमाइश के अलग रखो उनकी मर्ज़ी के अनुसार कपड़े बदलो, अपनी पसन्द की दख़ल न दो। अपनी चीज़ों का खुद ख़्याल रखो उनसे हिसाब नलो, फ़ुर्सत में कुछ देर उनके पास बैठो और उनके बैठने उठने पर नज़र करती रहो। चुपके चुपके घर की व्यवस्था से परिचित होती रहो कि क्या पकता है और किस तरह तक़सीम (बंटता) होता है। मेहमानों की क्या ख़ातिर होती है, नौकरों को क्या दिया जाता है। देखो दावत हो तो यद्यपि तुम दुल्हन हो मगर किसी न किसी काम में शरीक रहो अर्थात जगह साफ़ कराके फर्श व साबुन, पानी, थाल, लोटा, सुराही, गिलास तौलिया आदि उपलब्ध करो। पान तम्बाकू मौजूद रखो कि समय पर मिल जाये और तुम बदसलीक़ा (फूहड़) न कहलाओ।

अगर ठंडक हो तो चाय तैयार कराओ और गर्मी हो तो शर्बत, बर्फ, खाने में चटनी, अचार, सिर्का न हो तो पहले बनाकर हाज़िर करो मात्र दुल्हन न बनी रहो, शर्म व हया का मौका देखकर शर्म करो। ज़्यादा कोई चीज़ अच्छी नहीं होती। बड़ों के सामने अदब से सलाम कर के बैठ जाना और पर्दा वालों से पर्दा करना काफ़ी है, ज़्यादा शर्म से काम ख़राब हो जाता है।

दोनों वक़्त तमाम ज़रूरतों से निबट कर अपनी सास नन्दों के पास बैठो। सास का अदब करो। जो बात वह कहें अदब से जवाब दो, और आंख नीची रखो। तुम्हें जो कपड़े आदि की ज़रूरत हो वह किसी के माध्यम से या स्वयं कह सकती हो। ज़रूरत पूरी होने के बाद कुछ देर बैठी रहो। बातें भी करती रहो ताकि यह विचार न आये कि अपनी ज़रूरत से आयी थीं। बिला ज़रूरत भी बैठी रहो तुम्हें हर काम की जानकारी होती रहेगी। कभी कभी उनके कपड़े उन्हें सी–सी कर दो। अगर पान का शौक़ हो तो अक्सर बटुवा सीकर उसमें मसाला रख कर देती रहो। जिस चीज़ का शौक हो उन्हें अपने पास से करती रहो। जो बर्ताव अपनी मां के साथ रखती थीं वहीं बर्ताव उनके साथ रखो। नन्दों के साथ बड़े प्रेम से पेश आओ खाना या जो चीज़ कि उम्दा हो उसमें शरीक करो। छोटी नन्दों को अपने पास रखकर सब सिखाओ जो जानती हो। सलीक़ामन्दी (सुघड़पन), घर की सफ़ाई और जो तुम कर सकती हो वह उन्हें भी बताओ ताकि हर काम तुम्हारे न रहने पर भी तुम्हारी इच्छा के अनुसार होता रहे। देखो इसका ध्यान रखो जो काम अच्छा करती हो वह हमेशा करती रहो। आज है कल नदारद, यह अन्दाज़ अच्छा नहीं। हर काम धैर्य के साथ करना चाहिए।

आम ससुराल वालों से बर्ताव

जब अपनी जगह पर बैठो तो अपने घर की लड़कियों और जो आने वालियां हों उनको सिखाती रहो जो

भी तुम्हें आता हो, उसमें कंजूसी न करो। अगर वह अनपढ़ हो तो उनके पढ़ाने का प्रयास करो। मतलब यह कि किसी न किसी काम में लगाये रखो। तुम्हारा दिल भी बहलेगा और उनको आ भी जायेगा। जो तुम्हें देखने के लिए आये उसके लिए पान तम्बाकू का ध्यान रखो। ऐसी बात न करो कि तुम्हारे पास से दुखी हो कर जाये। तुम्हारे भाई भतीजे आयें तो बहुत खुश हो और ख़ातिर मदारात (आदर–सत्कार) में कभी न करो। अपने यहां का बतौर तोहफ़ा कुछ मौजूद हो पेश करो और जब बाहर जाने लगें तो कुछ नाश्ता करा दो और कभी कभी अपने घर बुलाती रहो। ससुराल में रहो तो मैका वालों की ख़ातिर करो मैका में ससुराल वालों की ख़ातिर तवाज़ो (आदर–सत्कार) करो। अपने पास बैठने वालियों के साथ मुहब्बत करो, उन्हें अच्छी बातें सिखाओ। बच्चियों को मसअला, मसायल से जानकारी कराओ कि यह आगे चलकर होशियार हो जायें। जब तुम से वह परिचित (मानूस) हो जायेंगी तो तुम्हारे साथ हमदर्दी (सहानुभूति) करेंगी। अर्थात बहुत से फ़ायदे तुम्हें पहुंचते रहेंगे। तुम्हारा हाथ बंटाती रहेंगी। बहुत से काम तुम्हारे मुफ़्त में करा देंगी। मगर तुम इस पर अपने काम से निश्चिन्त न रहो। जब तक वह तालीम पायें उनको सिखाने के साथ अपना काम यथासम्भव स्वयं करती रहो।

चाचा, मामा, ख़ाला (मौसी), फूफी

अपने चाचा, मामा, ख़ाला और फूफी की इज़्ज़त करो। अगर पास हों तो हर वक़्त ख़बर लेती रहो। अगर दूर हों तो रात को जा कर बहुत नम्रता से मिलो। अगर तुम से उम्र में छोटे हों और रिश्ते में बड़े जब भी उनका अदब करो, और जो कुछ कहें खुशी से मंजूर करो अगर चे नागवार हो, अच्छा न लगे। ऐसे रिश्तों की बहनों की सगी बहन समझो। उनसे मुहब्बत करो, उनको कभी कभी अपने घर में बुलाकर उनकी ख़ातिर करती रहो। जो चीज़ तुम्हारे घर में हो उनको भेजती रहो। दावत वगैरह में उनको सबसे पहले बुलाओ। उन्हें अपनी राय में शामिल रखो। ख़ाला, फूफी वगैरह को कोई बे अ़दबी की बात न कहो।इस का लेहाज रहे कि उन्हें सुनाना गोया मां–बाप को सुनाना है। अगर उन्हें क़र्ज़ दो तो भूले से भी तक़ाज़ा न करो, न दिल लगा रखो कि तकलीफ़ हो अगर गरीब हो तो छुप छुप के मदद करती रहो। कभी न याद करो कि हमने यह किया है वह किया है अगर वह कुछ करना चाहें और इतनी सकत नहीं रखतीं और करना ज़रूरी है तो अगर तुम इतनी क्षमता रखती हो तो तुम कर गुज़रो, लेकिन किसी पर जाहिर न करो कि वह शर्मिन्दा हों, शर्त यह है कि तुम्हारे शौहर (पति) और ससुराल वालों के खिलाफ़ न हो। उनकी इज़्ज़त अपने मां–बाप की इज़्ज़त समझो लड़कियों में आज कल यह पाबन्दी और इख़लाक़ (आचरण) मैं नहीं देखती। अगर कुछ दिन यही हालत और रही तो औलाद यह भी न समझेगी कि हमारे रिश्तेदारों में कोई और है या नहीं। अगर तुम्हें करते देखेंगी तो उनकी भी हिम्मत होगी। ●●●

अनुवाद व प्रस्तुतिकरण :
मो० हसन अन्सारी

(पृष्ठ २६ का शेष)

कई–कई महीने गुज़र जाते फिर भी चूल्हे में आग न जाती। मात्र खजूर व पानी पर ही हम लोग जीवन व्यतीत करते यहां तक कि आपके देहान्त के समय आपकी ज़िरह (अस्त्र) एक यहूदी के यहां गिरवी रखी थी तथा आपके पास इतना धन नहीं था कि आप उसे छुड़ा लेते।

अन्तिम हज के समय जब सारा अरब प्रायदीप आपके अधीन हो चुका था जहां तक दृष्टि जाती वहां तक मुसलमान ही मुसलमान नज़र आ रहे थे लेकिन आपकी स्थिति यह थी कि आप एक पुरानी गद्दी पर बैठे थे जिसका मूल्य अधिक से अधिक चार या पांच दिरहम था। पैग़म्बर साहब के बदन–मुबारक पर एक चादर थी उस समय आपने ईश्वर से प्रार्थना की "ऐ अल्लाह ! इसको ऐसा हज बना दे जिसमें कोई दिखावा तथा ख्याति न हो।"

वास्तव में पैग़म्बर साहब सांसारिक माया मोह से इतनी दूर हो गये थे जिसकी कल्पना ही नहीं की जा सकती है। आप सदैव परोपकार करते रहे और कहा करते थे कि अगर पर्वत के समान धन हमारे पास हो ता भी तीन दिन व्यतीत हो जाने पर मेरे पास एक भी दिरहम नहीं बचेगा सारा धन निर्धनों में बट जायेगा। वास्तविकता तो यह है कि पैग़म्बर साहब दान करने में हवा से भी तेज़ थे।

सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व वसल्लम।

सलीबी जंगों के समय

मुसलमानों के सद्व्यवहार के नमूने

डा० मुहम्मद इज्तिबा नदवी

आप नबी सल्ल० के समय और सहाबा के समय में शत्रुओं के साथ सद्–व्यवहार और उच्च आचरण के उदाहरण सुन चुके होंगे। हम शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया रहम० की भी गौरवशाली घटना का ज्ञान आप को होगा। कि किस प्रकार तातारी सरदार से मुसलमान कैदियों के साथ ईसाई व यहूदी क़ैदियों को भी रिहा कराया।

आपने सलीबी खूनी जंगों की दिल हिला देने वाली घटनाएं पढ़ीं और सुनी होंगी। छटी और सातवीं सदी हिजरी मुसलमानों के इतिहास में बड़ा महत्व रखती है। पूरा यूरोप अपने बादशाहों, पादरियों और धार्मिक नेताओं की नेतृत्व में विशाल सेना के साथ मसीह अलैहि० की क़ब्र की सुरक्षा के नाम पर इस्लामी जगत पर हमला करने के लिए चढ़ दौड़ा और, उसने दया, क्षमा, मानव आचरण, करूणा व सहानुभूति को त्याग कर, ऐसे बर्बरता पूर्ण और शर्मनाक चरित्र का प्रदर्शन किया, कि जिसका उदाहरण मिलना कठिन है। सलीब के नाम पर जुल्म व अत्याचार, बर्बरता, संग दिली व दरिंदगी की ऐसी कहानी है कि जिसका कोई स्पष्टीकरण स्वयं यूरोप और ईसाई दुन्या के न्याय प्रिय इतिहास कार भी न दे सके।

आइए देखें कि मुस्लिम शासकों और नागरिकों का इस बारे में क्या दृष्टिकोण था और उन्होंने इतिहास पर कैसी सुन्दर व मनमोहक छाप छोड़ी है।

ईसाई सेना हाथों में सलीब लिए हुए दोबारा चढ़ आयी और शाम के प्रसिद्ध शहर मअ़र्रतुन्नोमान का घेराव कर लिया। मुसलमान हथियार डाल देने को मजबूर हो गए। ईसाई शासकों से उन्होंने अपनी जान व माल और इज्ज़त का पक्का वायदा लेकर शहर के दरवाज़े खोल दिए। मगर उनकी हैरत की कोई सीमा न रही जब उन दरिन्दों ने रक्तपात शुरू कर दिया। सलीबियों ने वायदा करके भी उसे पूरी तरह रौंद डाला और क़त्ले आम करना शुरू कर दिया।

पाश्चात्य जगत के इतिहासकारों का अनुमान है कि इस निर्मम घटना में कत्ल किए जाने वाले मर्दों व औरतों और बच्चों की संख्या एक लाख से कम न थी। इस भयावह घटना के बाद सलीबी सेना ने बैतुल मक़दिस का रूख किया और उसका घेराव कर लिया। कुछ दिन के बाद कुदस के नागरिकों को आभास हुआ कि उनको पराजय से दो चार होना पड़ेगा, अतएव उन्होंने सलीबी सेनापति से जान व माल की ज़मानत मांगी, तो उसनें अप्रना झंडा दिया कि वे इसे मस्जिदे अक़्सा के ऊपर लगा दें और बिना किसी भय के निस्संकोच नगर के द्वार खोल दें। सलीबी लश्कर ने शहर में दाखिल होते ही अपने रंग ढंग व अपने अपराधी प्रवृत्ति दिखानी शुरू कर दी। शहर के लोगों ने मस्जिदे अक़्सा में शरण ली, मगर वहां भी वे बच न सके और एक एक करके सब के सब क़त्ल कर दिए गए। मस्जिद खून से पूरी तरह भर गयी। शहर की गलियां और सड़कें खून, खोपड़ियों और कटे हुए मानव अंगों से पट गयी।

इतिहासकारों का कहना है कि केवल मस्जिद अक्सा के अन्दर कत्ल किए जाने वालों की संख्या सत्तर हजार थी। इन शहीद होने वालों में बहुत से इमाम, विद्वान औलिया और बुजुर्गों के अलावा महिलाएं और बच्चे भी थे। पश्चिमी इतिहासकारों ने इस घटना को स्वीकार किया है। दुखद बात यह कि इस पर शर्मिन्दगी के बजाए बहुत सों ने इन निर्मम हत्याओं का गर्व के साथ उल्लेख किया है।

इसके बाद मुसलमानों का आचरण भी देखिए। इस घटना के नव्वे साल बाद सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी रहम० ने बैतुल मक़्दिस फिर फतह किया। शहर के अन्दर एक लाख यूरोपीय ईसाई मौजूद थे। उनकी जान व माल की जमानत ली और जो हैसियत दार लोग थे, उनको बहुत ही मामूली रक़म लेकर चालीस दिन के अन्दर अन्दर शहर से चले जाने का अवसर दिया। चौरासी हज़ार विदेशी ईसाई सुरक्षित अपने सारे सामन के साथ, अपने भाइयों से जा मिले। बड़ी संख्या में ग़रीबों को बिना कुछ लिए ही जाने दिया। सुलतान सलाहुद्दीन के भाई मलिक सालेह ने दो हज़ार ईसाईयों की अपनी जेब से रक़म अदा की। महिलाओं के साथ ऐसा सम्मान जनक व्यवहार किया कि आज की उन्नति

प्राप्त दुन्या का कोई शासक उसके बारे में सोच भी नहीं सकता।

आख़िर में यूरोप का बड़ा पादरी शहर से जाने लगा तो उसके साथ में गिरजा घरों, मस्जिदे अक़्सा, गुम्बदे ख़ज़रा और क़ियामह चर्च की इतनी अधिक दौलत थी जिसका पता केवल खुदा ही को था। सुलतान सलाहुद्दीन के कुछ साथियों ने सलाह दी कि इतनी ढ़ेर सारी दौलत ले जाने की अनुमति न दी जाए। सुलतान ने जवाब दिया : मैं वायदे को तोड़ने की ग़लती नहीं करूंगा।' और उस बड़े पादरी से भी तावान की वही रक़म ली गयी जो सामान्य नागरिकों से ली गयी थी।

आइए ! सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का एक और अनोखा और गौरवपूर्ण उदाहरण देखिए : सलीबी सेना के साथ पश्चिमी जनता की एक बड़ी संख्या अपने अक़ीदे के अनुसार हज़रत ईसा मसीह अलैहिस्सलाम की क़ब्र के दर्शन और बैतुल मक़दिस में ठहरने के शौक़ में चली आयी थी। मुसलमानों ने जब बैतुल मक़दिस फतह कर लिया और सलीबी सेना और जनता वहां से बाहर निकली, तो सब बहुत हैरान व परेशान थे कि कहां और किस रास्ते से जाएं ? डर के मारे उनके दिल कांप रहे थे। सुलतान ने उनका यह हाल देख कर उनको मुसलमान सेना की निगरानी में सलीबी ठिकानों तक बड़े सम्मान व सुरक्षा के साथा पहुंचा दिया। यद्यपि वह उनके साथ जंग की स्थिति में था।

औरतों की एक बड़ी संख्या जो रक़म अदा कर चुकी थी, सुलतान सलाहुद्दीन की सेवा में उपस्थित हुई और कहा कि हम ईसाई कैदियों और जंग में मारे गए सैनिकों की पत्नियां हैं या मांए व बहनें हैं या लड़कियां हैं और हमारा उनके सिवा न कोई संरक्षक है, न देख भाल करने वाला। सुलतान उन्हें रोता देखकर स्वयं भी रोया और आदेश दिया कि उनके सब आदमियों को तलाश किया जाय, जो मिल गया उसको उनके हवाले करके रिहा कर दिया जाए और जिनके संरक्षक मारे गये हैं उन्हें बहुत सा माल दे दिया जाए और उनसब को सलीबी ठिकानों और शहरों में पहुंचा दिया। ये औरतें जहां जाती सुलतान सलाहुद्दीन की महानता और सद्–व्यवहार के गुन गातीं।

आइए! इस परिस्थिति का दूसरा रुख भी देखें : सलीबी सैनिक बैतुल मक़दिस और फिलिस्तीन के दूसरे शहरों से पीछे हट कर अन्ताकिया पहुंच गए। कुछ ही समय के बाद ग़रीब ईसाइयों की एक बड़ी संख्या अन्ताकिया पहुंची और उसके ईसाई गर्वनर से शरण मांगी। उसने अत्यन्त निर्दयता और सख़्ती के साथ फटकार दिया और किसी भी प्रकार की मदद करने से इनकार कर दिया। वे सब किसी न किसी ईसाई शासक के पास गए, मगर किसी ने भी उनकी मदद न की। दर दर की ठोकरें खाते रहे अन्त में मुसलमानों ने ही इनको शरण दी।

कुछ पश्चिमी ईसाई तराबलस के लातीनी शासक से पनाह के इच्छुक हुए। उस ने भी साफ जवाब दे दिया। सहायता के बजाए कुछ दरबारियों और गुंडों को उनके पीछे लगा दिया। उन लोगों ने उन्हें शहर से बाहर निकाल दिया और उनका वह माल व सामान भी छीन लिया, जो उनको मुसलमानों ने साथ लेजाने दिया था। उनको एक एक कौड़ी का मुहताज बना दिया।

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के कारनामों और उच्च चरित्र को देख कर पश्चिमी इतिहासकार चकित हैं कि दुनिया की पूरी ईसाई आबादी ने उसके विरुद्ध जंग की घोषणा और इस्लामी शासन को तबाह व बर्बाद कर देने का संकल्प कर रखा था। वह फिर भी ऐसा शालीनता का व्यवहार करता रहा। स्वयं पश्चिमी इतिहासकारों की ज़बानी मुसलमान शासक और नेक बादशाह सलाहुद्दीन अय्यूबी की उच्च व्यक्तित्व और दुश्मन के साथ सद्–व्यवहार करने का यह नमूना भी देखिए।

सलीबी सेना का सेनापति और नेता इंगलैंड का बादशाह शेरदिल रिचर्ड बीमार पड़ा। सुलतान को उसकी बीमारी की सूचना मिली तो अपने विशेष चिकित्सक को उसके उपचार के लिए भेज दिया। दवाओं के अलावा ऐसे मेवे और फल भी भेजे, जो रिचर्ड को वहां आसानी से नहीं मिल सकते थे।

यूरोपीय इतिहासकार ही बताते हैं कि एक पश्चिमी औरत रोती हुई सुलतान के खेमे में सामने आ खड़ी हुई। सुलतान ने पूछा कि क्या बात है? उसने बिलबिलाते हुए और रोते हुए बयान किया कि दो मुसलमान सैनिकों ने उसके बच्चे को उससे छीन लिया है। सुलतान यह सुनकर रो पड़ा और बच्चे की तलाश में तुरन्त आदमी भेजे। उन आदमियों ने वह बच्चा लाकर मां के हवाले कर दिया। सुलतान सलाहुद्दीन ने उसको बहुत से उपहार देकर सेना की निगरानी में सुरक्षित सलीबी छावनी में पहुंचा दिया।

इस्लाम की प्रमुख विशेषताएं

डा० मुहसिन उस्मानी

इस्लाम की प्रमुख विशेषता यह है कि उसने अन्य धर्मों व विश्वासों के साथ पक्षपात और संकीर्णता का व्यवहार नहीं किया बल्कि अत्यन्त उदारता, उदार हृदय और नम्रता का मामला किया। उसने समस्त आसमानी धर्मों को एक ही स्रोत का नतीजा बताया और सारे ईशदूतों को एक दूसरे का भाई बताया और आस्था व धर्म को अपनाने में किसी प्रकार की ज़बरदस्ती व बल को पसन्द नहीं किया और सारे ही धर्मों के धर्मस्थलों की सुरक्षा और उनका बचाव किया।

धार्मिक मतभेदों के आधार पर किसी को कष्ट पहुंचाना उचित नहीं बताया और मानव आधार पर समस्त मानव जाति को समान समझा। आदर, सत्कार, महानता और सत्ता मिली तो भलाई व ईशभय के कारण इतने व्यापक स्तर पर मुसलमानों ने ग़ैर मुस्लिमों के साथ उदारता का प्रदर्शन किया कि कितनी ही बार घाटे व हानि को झेलना पड़ा लेकिन कुरआन पाक और हदीसे नबवी के अन्तर्गत मुस्लिम जगत में बसने वाले यहूदी व ईसाई और अन्य धर्मों को पूरी शांति व सन्तोष का वातावरण उपलब्ध कराया। यद्यपि मुसलमानों को इसके विपरीत ग़ैर मुस्लिम आबादियों से प्रायः कष्टदायक हालात का सामना करना पड़ा। यहां इतिहास की वे घटनाएं प्रस्तुत की जा रही है जिनसे ग़ैर मुस्लिमों के साथ किए जाने वाले व्यवहार का पूरा पूरा पता लग जाएगा।

यहूदियों के साथ उदारता

हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मुकर्रमा से अपने सहाबा किराम रज़ि० के साथ मदीना मुनव्वरा हिजरत (देश त्याग) कर चुके हैं मदीना की आबादी दो बड़े क़बीलों के अतिरिक्त यहूदियों के तीन प्रभावशाली धनवान और चतुर क़बीलों बनू नज़ीर बनु क़ैनक़ाअ पर आधारित थी। दोनों अरब क़बीलों में बड़ी तेजी के साथ इस्लाम फैल गया। यहूदियों ने अपना धर्म छोड़कर इस्लाम स्वीकारना पसन्द नहीं किया। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहूदियों से एक सन्धि की और उनके इस बात की स्वतंत्रता दी कि वे लोग अपने धर्म पर मौजूद रहे और मुसलमान उनकी रक्षा करें और वे लोग मदीना मुनव्वरा पर आक्रमणकारियों के विरुद्ध मुसलमानों की सहायता करेंगे।

यहूदी महिला का दिया हुआ उपहार स्वीकार करना

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ पड़ोसी किताब वालों में से थे अर्थात यहूदी व ईसाई थे आप उनके साथ भला और अच्छा व्यवहार करते थे आपकी आदत उपहार स्वीकार करने की थी ताकि किसी का दिल न टूटे। अतएव आपने एक यहूदी महिला की ओर से विषैला बकरी के हाथ का उपहार स्वीकार कर लिया और उसको खाने के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हुआ।

ईसाइयों के प्रतिनिधिमंडल के साथ असाधारण आदर सम्मान की घटना

हब्शा के ईसाइयों का एक प्रतिनिधि मंडल मदीना मुनव्वरा पहुंचता है। आप तैयार होकर उसका स्वागत करते हैं और उसे बड़े सम्मान के साथ मस्जिद में ठहराते हैं और स्वयं उनके अतिथि सत्कार का काम करते हैं और फरमाते हैं कि इन लोगों ने हमारे सहाबा (साथियों) का हब्शा की हिजरत के समय बहुत अधिक आदर सत्कार किया था तो मैं चाहता हूं कि स्वयं इनका सम्मान व सेवा करूं। नजरान के ईसाइयों का एक प्रतिनिधि मंडल आया तो उनको भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मस्जिद में ठहराया और मस्जिद के एक ओर उनको नमाज़ पढ़ने की अनुमति प्रदान की और स्वयं मुसलमानों के साथ दूसरे हिस्से में नमाज़ अदा की।

चर्च की सुरक्षा के लिए उसमें नमाज़ न पढ़ना

हज़रत उमर फ़ारूक रज़ि० बैतुल मक्दिस पर विजय पाने के बाद ईसाइयों के बड़े पादरी की इच्छा पर मदीना मुनव्वरा से आये हैं। ईसाइयों की मांगों में से एक मांग यह भी होती है कि किसी यहूदी को उनके साथ उनके इस शहर में ठहरने की अनुमति न दी जाए। आप इस मांग को स्वीकार कर लेते हैं। बैतुल मक़्दिस के सबसे

बड़े गिरजा घर 'अलक़ियामह' में असर की नमाज़ का समय हो जाता है पादरी हज़रत उमर रज़ि० से कहता है कि अमीरुल मोमिनीन इसी स्थान पर नमाज़ पढ़ लीजिए आप फरमाते हैं "नहीं, यह संभव है कि भविष्य में मुसलमान इसे मस्जिद बना लें।" इसीलिए गिरजा घर से निकलकर थोड़ी दूरी पर नमाज़ पढ़ते हैं। अतएव आज उसी स्थान पर मस्जिदे उमर मौजूद और आबाद हैं। मुसलमानों ने शांति, संतोष और सुलह की अवस्था में कभी किसी गिरजा को या मंदिर को मस्जिद में नहीं बदला।

ग़ैर मुस्लिम के मकान पर क़ब्ज़ा करके मस्जिद का निर्माण संभव नहीं

मिस्र की एक ईसाई महिला हज़रत उमर रज़ि० से शिकायत करती है कि मिस्र के गवर्नर अम्र बिन आस ने ज़बरदस्ती उसका घर मस्जिद में मिला लिया है। हज़रत उमर रज़ि० मिस्र के गवर्नर से मालूम करते हैं। वे अपनी सफ़ाई में बताते हैं कि "मुसलमानों के लिए मस्जिद छोटी पड़ रही थी। उस औरत का मकान मस्जिद के निकट था। उससे कहा गया कि इसके बदले में इसकी क़ीमत लेकर मस्जिद का काम करने दो। उसने इससे इन्कार कर किया तो हमने मस्जिद की आवश्यकता को महत्वपूर्ण मानकर मकान तुड़वाकर मस्जिद में मिला लिया और उस मकान की क़ीमत की रक़म बैतुलमाल में जमा कर दी है कि उस रक़म को जब चाहे ले सकती है।" साथ में मकान में रहने वालों की रिहाइश का प्रबन्ध कर दिया गया।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० ने ये बातें सुनने के बाद हज़रत अम्र बिन आस गवर्नर मिस्र को आदेश दिया कि "मस्जिद का वह हिस्सा गिराकर उस ईसाई औरत का मकान उसी जैसा बनवाकर वापस दें।" दुन्या के क़ानून और आम क़ायदे के अनुसार गवर्नर मिस्र ने जो कुछ किया था वह ठीक ही था लेकिन इस्लाम की उदारता और अन्य धर्म वालों के साथ अच्छे व्यवहार और बेहतर बर्ताव का यह उच्च उदाहरण है जिसे हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० ने प्रस्तुत किया। अब इस घटना को बार बार लिखने और दुन्या के सामने पेश करने की आवश्यकता है।

क़ाज़ी का निर्णय खलीफ़ा के विरुद्ध और ईसाई के पक्ष में

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ि० का कार्य काल है। हज़रत अली रज़ि० कूफ़ा में जनता की देखरेख के लिए गश्त में हैं। अचानक उनकी नज़र एक ईसाई पर पड़ती है उसके पास अपनी कवच नज़र आती है। वे उसे लेकर क़ाजी शुरैह के पास जाते हैं और सामान्य व्यक्ति की भांति उसके विरुद्ध मुक़दमा पेश करते हैं –

"यह कवच मेरी है और मैंने न इसे बेचा है और न दान किया है।"

काज़ी शुरैह ने ईसाई से पूछा – 'अमीरुल मोमिनीन जो कुछ कह रहे हैं उसके बारे में तुमको कुछ कहना है?

ईसाई ने जवाब दिया, 'यह कवच तो निश्चय ही मेरी है और अमीरुल मोमिनीन भी मेरे निकट झूठे नहीं हैं।'

क़ाज़ी शुरैह ने हज़रत अली रज़ि० से पूछा कि "आपके पास कोई सबूत है?"

हज़रत अ़ली मुस्कुरा दिए और फरमाया "नहीं मेरे पास कोई सुबूत नहीं है।"

तब क़ाज़ी शुरैह ने निर्णय सुनाया कि "यह कवच इस ईसाई को दे दी जाए।"

ईसाई उसे लेकर जाने लगा और हज़रत अ़ली उसे देखते रहे।

थोड़ी दूर जाकर वह ईसाई आया और दर्द भरी आवाज़ में कहा "मैं गवाही देतो हूं कि यह दीन (इस्लाम) अल्लाह का है। अमीरुल मोमिनीन मुझे अपने क़ाज़ी के सामने पेश करते हैं और क़ाज़ी उनके विरुद्ध निर्णय सुना देता है –

अश्हदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहु व रसुलुहू

अमीरुल मोमिनीन ! खुदा की क़सम यह कवच आपकी ही है जब आपने सिफ़्फ़ीन की ओर कूच किया तो मैं आपके लश्कर के पीछे हो लिया। यह कवच आपके बादामी वाले ऊंट पर से गिरी थी।'

हज़रत अली ने फ़रमाया कि "जब तुम ईमान ले आए तो अब यह कवच तुम्हारी ही है।"

अधिकृत शहर दमिश्क़ की ईसाई आबादी के साथ बर्ताव

दमिश्क़ विजय हो चुका है। मुसलमानों का पूरे शहर पर अधिकार है। ईसाई आबादी भयभीत है कि उसे देश निकाला दिया जाएगा या उसकी हत्या कर दी जाएगी? मगर हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० मुसलमानों के दोनों नेता उनके साथ इतना अच्छा

व्यवहार करते हैं कि वे लोग चकित रह जाते हैं। उनके सबसे बड़े गिरजा के विशाल प्रांगण में ईसाई भरे हुए हैं। उनका सबसे बड़ा पादरी यह दृश्य व मुसलमानों का यह बर्ताव देखकर आगे बढ़ता है और कहता है कि "मुसलमानों! हमने तुमसे ज़ियादा अच्छे आचरण, चरित्र वाले और उत्तम मनुष्य नहीं देखे।"

नमाज़ का समय आ जाता है मुसलमान नमाज़ के लिए जगह तलाश करने के लिए इधर उधर दौड़ते हैं। ईसाइयों को इस बात का पता लगता है कि ता वे निवेदन करते हैं कि आइए बड़े गिरजा के एक हिस्से को ही मस्जिद बना लीजिए। और फिर दोनों मुसलमान व ईसाई अपने अपने नमाज़ के समयों में एक क़िब्ले की और दूसरा पूर्व की ओर मुंह करके नमाज़ें अदा करते हैं।

उमवी शासनकाल में ग़ैर मुस्लिम उच्च पदों पर मौजूद थे।

मुसलमानों के उदार हृदय और उदारता का एक प्रमाण और भी है और वह यह कि उन्होंने सरकारी पदों और नौकरियों में भी दूसरे धर्मों के लोगों को रखा। बनू उमय्या और बनू अब्बास के शासन काल में बग़दाद व दमिश्क़ के चिकित्सा विद्यालयों व कालेजों के मुख्य पदाधिकारी ईसाई हकीम थे हज़रत मुआवियह रज़ि० का एक विशेष हकीम एक ईसाई ही था जिसका नाम इब्ने असाल था और उनका सचिव "सरजॉन नामक एक ईसाई था।

मर्वान बिन हकम ने अपने शासन काल में मिस्र के बड़े बड़े पदों पर ईसाई थनासियूस और ईसाई इसहाक़ को नियुक्त किया। इसहाक़ तो अपने अन्तिम दौर में गवर्नर कार्यालय का इन्चार्ज हुआ और वह बहुत अधिक धनी था। उसने शहर 'रिहा' में बड़ी दौलत खर्च करके एक गिरजा बनवाया। खलीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मर्वान ने इसहाक़ के जिम्मे अपने छोटे भाई अब्दुल अज़ीज़ की शिक्षा एवं प्रशिक्षाण की ज़िम्मेदारी सौंपी जो बाद में मिस्र के गवर्नर हुए। ये ख़लीफा हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के बाप थे।

अब्बासी काल में ईसाइयों का आदर सत्कार

अब्बासी काल में ख़लीफा अबू जाफ़र मन्सूर, मेंहदी, हारून रशीद के दरबार में 'बख़शीयूअ' ईसाई परिवार को बड़ा सम्मान करते था। 'जरजीस' से अबू जाफ़र का बड़ा गहरा सम्बन्ध था और वह उसकी बहुत अधिक आवभगत करता था और उसको हर प्रकार का सहयोग देता था। एक बार बीमार पड़ा तो मन्सूर ने उसे शाही मेहमान खाने में बुलवाकर स्वयं उसके उपचार की देखभाल की और उसको देखने आया। जरजीस ने ख़लीफ़ा मंसूर से कहा कि वह अपने घर जाना चाहता है ताकि अपने बुजुर्गों के साथ दफ़न हो। अबू जाफ़र ने उसे इस्लाम की दावत दी ताकि जन्नत में दाखिल हो तो उसने जवाब दिया कि "मैं चाहता हूं कि अपने बाप दादाओं के साथ रहूं चाहे वे जन्नत में हो या जहन्नम में।'

ख़लीफ़ा मन्सूर इस जवाब पर हंस दिया और उसके सफ़र की तैयारी करायी। इसी के साथ ख़लीफा ने उसको दस हज़ार दीनार भी प्रदान किए। इस जैसी असंख्य घटनाएं अब्बासी ख़लीफ़ा और उस्मानी खिलाफ़त, हिन्दुस्तान और पूर्व के मुस्लिम शासनकाल में नज़र आती है।

उदार हृदय वाले धर्म का एक उदाहरण

हिन्दुस्तान के विभिन्न मुस्लिम शासनों में पढ़े लिखे, शिक्षित हिन्दू पंच हज़ारी, दस हज़ारी पदों पर पदासीन थे और उनके आदेशों को लागू किया जाता था। हैदराबाद दकन की मुस्लिम रियासत में महाराजा सर किशन प्रसाद मंत्री के पद पर आसीन थे और उनका बहुत अधिक गौरव एवं लोकप्रियता प्राप्त थी। इसी प्रकार की सुखद घटनाओं को देखकर एक पश्चिमी बुद्धिजीवी को कहना पड़ा .... .. कि "दुनिया की कौमों को अरब जैसे दयावान और उदार हृदय वाले विजेता नहीं मिले और न उनके धर्म से अधिक उदारवादी और पवित्र धर्म ही मिला।"

सरकार के ग़लत फ़ैसले पर इमाम औज़ाई का विरोध

लेबनान के गवर्नर हज़रत अली इब्ने अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ि० थे किसी बात पर ईसाइयों ने विद्रोह कर दिया और बड़ा हंगामा किया। इसके नतीजे में बहुत अधिक लोग मारे गए। गवर्नर ने विद्रोह कर दिया और बड़ा हंगामा किया। इसके नतीजे में बहुत अधिक लोग मारे गये। गवर्नर ने विद्रोह को दबाने के लिए युद्ध किया स्थिति पर नियंत्रण कर लिया। उन्होंने सोचा इन सामाजिक तत्वों में से कुछ लोगों को दूसरे क्षेत्रों और गांव में भेज दिया जाए तो वे एक जगह रह कर फिर दोबारा सर न उठा सकेंगे।

आज के प्रगतिशील संसार में यह दंड बड़ा साधारण दंड माना जाता है गवर्नर के इस कार्य की सूचना धर्म शास्त्री व इमाम औज़ाओ को पहुंची तो उन्होंने गवर्नर के नाम एक पत्र में उनके इस कार्य की कड़ी आलोचना की और लिखा कि लेबनान की पहाड़ियों में ज़िम्मियों (मुस्लिम राज्य में पनाह लेने वाले ग़ैर मुस्लिम) के देश निकाला की बात मालूम हुई। इसमें वे लोग भी होंगे जो इस विद्रोह में भागीदार नहीं हुए और वे अपने घरों व जायदादों से बेदख़ल कर दिए गए जबकि अल्लाह तआला फ़रमाता है –

वला तज़िरु वाज़िरतुन विज़र–उख़रा

"कोई बोझ उठाने वाली दूसरे का बोझ नहीं उठाएगी।"

इस पर अमल करना अत्यन्त आवश्यक था। हुज़ूर सल्ल० का कथन है – "जिसने सन्धि किए जाने वाले व्यक्ति पर अत्याचार किया या उसकी ताक़त से अधिक उससे काम लिया या ज़िम्मेदारी सौंपी तो मैं उससे क़ियामत के दिन झगड़ूंगा।"

इस शिक्षा पर अमल करना आवश्यक था। गवर्नर लेबनान को जिस समय पत्र मिला वह परेशान हो गया और उन सबको घरों और उन क्षेत्रों से तत्काल वापसी का आदेश भिजवाया। उसे उस समय तक सन्तोष न हो सका जब तक कि एक एक व्यक्ति अपने घर वापस न आ गया। उस जमाने के विद्वान व क़ाज़ी शासकीय वर्ग को ग़लत कामों पर टोक दिया करते थे।

●●●

(पृष्ठ २३ का शेष)

शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी (रह०) ने सबसे पहले कुरआन का फ़ारसी में अनुवाद किया। उनके बाद उनके बेटे–हज़रत शाह अब्दुल क़ादिर मुहद्दिस देहलवी (रह०) ने हिन्दी भाषा में अनुवाद किया जिसे आज के मुसलमान उर्दू कहते हैं। लेकिन उर्दू भाषामें आज से २५० वर्ष पहले हिन्दी या हिन्दवी और हिन्दुस्तानी भाषा कही जाती थी। वह अपने अनुवाद की भूमिका में लिखते हैं –

जिस तरह हमारे बाबा साहब बड़े हज़रत शाह वलीउल्लाह, अब्दुर्रहीम के बेटे, सब हदीसें जानने वाले, हिन्दुस्तान के रहने वाले फारसी ज़बान में कुरआन के माने आसान करके लिखे हैं। उसी तरह आजिज़ ने हिन्दी जबान में कुर्आन के माने आसान करके लिखे। अलहम्दुलिल्लाह यह आरज़ू सन १२०५ हिजरी (१७९०ई०) में हासिल हुई। शाह साहब सूरह तौबा की आयत न० २८ की व्याख्या में लिखते हैं – मजिस्दे हराम में मुशरिक का जाना माना है। लेकिन और किसी भी मस्जिद में जा सकता है और अपवित्रता उनके दिल में है बदन पर नहीं।'

एतिराज करने वाले ने यह कैसे कह दिया कि मुशरिक को पूर्ण रूपेण कुर्आन ने गंदा और नापाक कहा है। दरअस्ल बात यह है कि मुशरिक का शिर्क उसकी आस्था और श्रद्धा की नापाकी है, शरीर की नापाकी नहीं है। आपने देखा होगा कि भारत में मस्ज़िदों के निर्माण में कारीगर मजदूर वगैरह अधिकतर ग़ैर–मुस्लिम होते हैं। सफ़ेदी, रंग, पेंट के लिए भी गैर–मुस्लिमों को बुला लिया जाता है। हम ग़ैर–मुस्लिमों के हाथ का पकाया खाना भी लेते हैं। ज्ञात हुआ कि शरीर की अपवित्रता नहीं है, अस्ल नापाकी शिर्क और अक़ीदे (आस्था) की है।

जो लोग आमातैर पर ऐतराज करते हैं उन्हें मालूम होना चाहिए कि पहले ज़माने से आज तक हिन्दू और मुसलमानों के घनिष्ठ संबंध रहे हैं। कारोबार, सामाजिक सांस्कृतिक संबंध, साथ–साथ रहना, खाना–पीना आपस में सलाह मशवरा करना आदि सभी तरह से संबंध रहे हैं। भूखों को खाना खिलाना, दान देना, परोपकार करना जैसे अच्छे काम हिन्दुस्तानी मुसलमान हिन्दुओं के साथ भी करते हैं।

आज सारी दुन्या जानती है कि इस्लाम ने कभी भी छूतछात को मान्यता नहीं दी। इस्लाम ने रंग, नस्ल, जातपात , ऊंच नीच के विभेदों को नहीं माना है। हज के दिनों में लाखों मुसलमान मक्का हज के लिए जाते हैं। इनमें नीची और ऊंची जात हर तरह के मुसलमान होते हैं। किसी भी मुस्लिम को काबा वाली मस्जिद में आना मना नहीं है। सिर्फ़ मुशरिक को आना मना है कि वह शिर्क (बहुदेवत्व) की गंदगी इस इलाके में न फैला सके जो एकेश्वरवादियों का प्रशिक्षण केन्द्र है, दीक्षा–केन्द्र और पूजा स्थल है। हर किसी सच्चे आदमी को इस वास्तविकता को समझना चाहिए।

भारत में भी बहुत से मंदिर ऐसे हैं जहां खुद हिन्दुओं की निम्न जातियों को लोग जैसे तेली, माली, धोबी, दलित आदि प्रवेश नहीं कर सकते। इनके हाथ के पानी को भी धार्मिक ब्राह्मण नहीं पीता। इनका हाथ लगा खाना नहीं खाता इस पर एतराज़ क्यों नहीं किया जाता ? ●●●

भारत में कभी भी इस्लाम के ख़िलाफ़ विद्वेष नहीं रहा

मौ० अब्दुल करीम पारेख

कुर्आन की सूरत नं० १०६ का नाम काफ़िरून है। जिसका अनुवाद इस प्रकार है : कह दो ऐ इन्कारी लोगो जिनकी पूजा तुम करते हो मैं कभी उनकी पूजा नहीं कर सकता। और मैं जिसकी पूजा करता हूं तुम उसकी पूजा करने वाले नहीं हो। और सुन लो कि मैं कभी उनकी पूजा करने वाला नहीं जिन्हें तुम पूजते हो। और मैं जिसकी पूजा करता हूं तुम उसकी पूजा करना नहीं चाहते। बस अब तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन, मेरे लिए मेरा दीन है।'

इस सूरत के भावार्थ से ज्ञात होता है कि तुम मेरा धर्म नहीं अपनाते हो। मैं जिसकी स्तुति करता हूं तुम उसकी स्तुति नहीं करते, और तुम जिनकी स्तुति करते हो मैं उनकी स्तुति नहीं कर सकता। तो अब तुम अपने धर्म पर रहो मैं अपने धर्म पर रहूं। मेरे लिए मेरा धर्म है और तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म।

भारत में कभी भी इस्लाम के ख़िलाफ़ विद्वेष नहीं रहा है। देश विभाजन के बाद माहौल विषाक्त हुआ है। इससे पहले का चौदह सौ वर्ष का जो इतिहास रहा है उसमें कभी भी इस्लाम के विरुद्ध हिन्दुओं के दिलों में दुश्मनी नहीं थी। १०००–१२०० वर्ष पहले जब अरब से इस्लाम के आहवान–कर्ता मुसलमान भारत आए तो यहां के लोगों ने उनका स्वागत किया, उन्हें अपने यहां जगह दी। वे अपने साथ जो सच्चा दीन लाए थे उसे भारत के बहुत से लोगों ने कुबूल किया। मैं अपनी इस बात को साबित करने के लिए एक दलील पेश करता हूं कि इस वक़्त पाकिस्तान में ११ करोड़ मुसलमान है, भारत में २२ करोड़ और बंगलादेश में २० करोड़। तीनों देशों में कुल ५३ करोड़ मुसलमान हुए । इनमें एक करोड़ मुसलमान भी अरबों की या उन लोगों की संतान नहीं हैं जो यहां अन्य देशों से इस्लाम का संदेश लेकर आए थे। एक करोड़ तो क्या ५० लाख भी नहीं होंगे। अधिकतर यहीं के मूल नागरिक हैं जिन्होंने इस्लाम कुबूल किया। इस वास्तविकता का कोई भी इंकार नहीं कर सकता।

मैंने अपने एक भाषण में राष्ट्रपति के सामने यह बात कही कि हिन्दुओं ने इस्लाम को अपनाया। आज हमें इस पर गर्व हे कि हमारे पूर्वजों ने इस्लाम को अंगीकार किया जो हिन्दू थे। खुद मैं अब्दुल करीम पारेख आप से संबोधित हूं। हमारे पूर्वज हिन्दू थे। बहुत से देवी–देवताओं की मान्यता और बहुत सी मूर्तियों की पूजा अर्चना हमारे मन को संतुष्ट नहीं करती थी। हमने जैन धर्म के श्वेताम्बर पक्ष के स्थानक दासी पंथ को अपनाया, इसमें मूर्ति पूजा नहीं है। फिर जब भारत में इस्लाम का संदेश आया तो हमारे पूर्वजों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। इससे यह साबित होता है कि हमारा बलात धर्म परिवर्तन नहीं किया गया।

यह कहना भी गलत है कि हिन्दुओं के दिलों में इस्लाम दुश्मनी बैठ गई है। यह सिलसिला तो सोमनाथ से निकली रथयात्रा और अयोध्या विवाद से शुरू हुआ है। राजनीतिक रूप से कश्मीर मुद्दा भी इस बिगाड़ का कारण बना। साथ में पाकिस्तान से हमारी राजनीतिक अनबन की भी इसमें भूमिका है। वरना हमारे हिन्दु भाई हमेशा उदारवादी रहे। उन्होंने किसी पर हमला नहीं किया, बल्कि जब भारत में इस्लाम के प्रचारक आए तो उनका स्वागत किया और उन्हें बसाया। मैं तो हिन्दुओं को सूझ बूझ वाले, नम्रता वाले, न्यायवादी, शालीन, सहनशील मानता हूं। सहिष्णुता हिन्दुओं में जितनी है शायद दुन्या की अन्य जातियों में नहीं है। लेकिन पाकिस्तान जब से द्विराष्ट्र सिद्धान्त (**Two Nation Theory**) पर बना हिन्दू और मुसलमान दो अलग–अलग कौमें मान लिए गए। यह जिन्नाह साहब के दिमाग की उपज थी। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद जिन्होंने कुरआन की टीका भी लिखी है, उन्होंने इस सिद्धान्त और मानसिकता को नहीं स्वीकारा और कहा कि पूरी क़ौम (राष्ट्र–जाति) हमारी एक है अर्थात हिन्दुस्तानी। आज भी भारत वासी अपनी राष्ट्रीयता हिन्दुस्तानी लिखते हैं। और मुसलमान विदेशों में जाते हैं तो हिन्दी मुसलमान कहलाते हैं। हम हज के लिए जाते हैं तो अरब के लोग हमें हिन्दी मुसलमान कहते हैं यानी

हिन्दुस्तान से आया हुआ मुसलमान । हिन्दुस्तानी या भारतीय होने पर हमें गर्व है। धर्म–परिवर्तन करने से या कोई धर्म अपनाने से राष्ट्रीयता नहीं बदलती।

हर पैग़म्बर अपनी क़ौम को 'या क़ौम' कहकर पुकारता है जब कि उसकी क़ौम में से बहुत से लोग इस्लाम को क़ुबूल नहीं किए होते। फिर भी क़हता है कि क़ौम तो मेरी है। द्विराष्ट्रीय सिद्धान्त जिन्नाह साहब की ज़बरदस्ती की उपज था और हमारे सिर थोप दिया गया। लेकिन क्या मैं आपसे पूछ सकता हूं कि देश–विभाजन के मामले में इस्लामी विद्वान जिन्नाह साहब के साथ थे या देश विभाग के विरुद्ध थे ? हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी, हज़रत मौलाना हिफजुर्रहमान सियौहारवी, मौलाना अबुल कलाम आजाद, मौलाना मुहम्मद अली जौहर मौलाना मुहम्मद शौकत ये सभी बड़े विद्वान थे। स्वतंत्रता संग्राम में इन्होंने भाग लिया था। ये सभी द्विराष्ट्रीय सिद्धान्त को नहीं मानते थे। ये कहते थे क़ौमियत (नेशनल्टी) हमारी आपकी एक है, चाहे आपका धर्म इस्लाम, ईसाई, हिन्दू या अन्य कोई भी हो। अलग–अलग धर्म होने के बावजूद राष्ट्रीयता अलग–अलग नहीं है।

अभी भी दुन्या में ५० से अधिक मुस्लिम देश हैं और कोई भी ऐसा मुस्लिम देश नहीं है जिसमें हिन्दू और अन्य धर्मों के मानने वाले जैसे यहूदी, ईसाई आदि न हों। गुजराती, बंगाली, पंजाबी सभी हिन्दू यहां रहते हैं। मुस्लिम देशों में हिन्दू महत्वपूर्ण पदों पर हैं। अभी आर०एस०एस० के मेरे एक दोस्त मुझ से मिलने के लिए आए। उन के साथ एक हिन्दू डाक्टर भी थे, जिनका लड़का और बहू ब्रूनाई जैसे मुस्लिम देश में बहुत बड़े पद पर काम कर रहे हैं और कई लाख दिरहम उनके लड़के का वेतन है। गाड़ी, घोड़े बंगला, अलग से है। इस सब के बावजूद कैसे कहा जाता है कि इस्लाम ने हिन्दुओं के साथ अन्याय किया और उनसे नफ़रत का हुक्म दिया। यदि किसी मुग़ल सम्राट ने ऐसी हरकत की हो तो इसकी जिम्मेदारी इस्लाम पर और मुसलमानों पर कुछ भी नहीं है।

(अ) कुरआन में आया है : ऐ ईमान वालो ! मुशरिक तो बस अपवित्र ही हैं। अतः इस वर्ष के बाद वे मस्जिदे हराम के पास न आएं। और यदि तुम्हें निर्धनता का भय हो तो आगे यदि अल्लाह चाहेगा तो तुम्हें अनुग्रह से समृद्ध कर देगा। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जानने वाला, अत्यंत तत्वदर्शी है।' (सूरह तौबा, आ० २८)

काबा शरीफ़ की मस्जिद जिसे मस्जिदे हराम कहते हैं एकेश्वरवाद का केन्द्र है और मुसलमानों का मुख्य स्थल है। इसलिए सन् ६ हिजरी में एलान कर दिया कि अब इस वर्ष के बाद कोई मुशरिक यहां न आने पाए। जो लोग अल्लाह के साथ किसी को भी भागीदार बनाएं वे अपवित्र हैं और यह अपवित्रता उनकी आस्था के कारण है। जब तक तौबा करके शुद्ध एकेश्वरवादन अपनाएं, काबा के पास न आएं। मुसलमानों को डर हुआ कि कारोबार कैसे चलेंगे और लेन–देन कैसे होगा। अल्लाह ने फ़रमाया कि अपने फ़ज़्ल से तुम्हें धनी कर दूंगा। आज तक मक्का वालों को खुशहाली है जिसकी मिसाल अन्य क्षेत्रों में नहीं। आगे अल्लाह तआला ने सारा देश ही मुसलमान कर दिया, यह भय भी जाता रहा।

आज बहुत से लोग यह एतराज़ करते हैं कि हमें मक्का जाने की अनुमति क्यों नहीं ? इस धार्मिक पवित्र स्थल में जाने से ग़ैर–मुस्लिम को मना क्यों किया गया है ?

इसका जवाब यह है कि मक्का में जो भी दाख़िल हो, उस पर लाज़िम है कि मक्का की सीमा शुरू होने की जगह से पहले ही इहराम बांधे। दो चादर सफ़ेद–एक लुंगी की तरह बांध ले और दूसरी कांधे पर डाल ले। सिर खुला हो, पैर खुले हों और सिर्फ़ एक खुदा की तकबीर बयानकरते हुए मक्का में दाख़िल होकर काबा शरीफ़ का तवाफ़ (परिक्रमा) करे। शिर्क की भर्त्सना करे, तौहीद (एकेश्वरवाद) का इक़रार करे। फिर सफ़ा और मरवह दोनों पहाड़ों के बीच दौड़ लगाकर अल्लाह की महानता व्यक्त करे। फिर अल्लाह के नाम पर सिर मुंडवाए, तब इस शहर में प्रविष्ट हो सकेगा। अब जो मुशरिक हो वह सब काम क्यों करेगा ? और अगर मुशरिक होकर भी दिखावे को यह सब काम करेगा तो यह दोग़लापन है। काबा के इलाक़े में हज व उमरा वाली इबादत शुद्ध एकेश्वरवाद पर क़ायम है। इसलिए काबा के आसपास का इलाक़ा जो हज और उमरे से संबंधित है उसकी (हद बंदी) कर दी गयी है। इसे शिर्क से सुरक्षित रखने के लिए यह क़दम उठाया गया है कि कोई मुशरिक इस इलाके में दाख़िल न हो।

अब रहा यह सवाल कि मुशरिक को अपवित्र क्यों माना गया है ? इसकी विवेचना करते हैं। हमारे देश में हज़रत

(शेष पृष्ठ २१ पर)

रसूलुल्लाह सल्ल० का आदर्श चरित्र-चित्रण

मोहम्मद रफ़ी रिसर्च स्कालर

हज़रत मोहम्मद साहब को अल्लाह ने इस मृत्युलोक में अपना आख़िरी रसूल (सन्देश वाहक) बनाकर भेजा था। आप सारे नबियों के नायक (सरदार) बन कर आये तथा बहुत ही महान पुरुष थे। पैग़म्बर साहब का चरित्र उत्तम व उच्चकोटि का था। जिसके बारे में कुछ सन्देह नहीं किया जा सकता है। आप बचपन से ही नेक स्वभाव के व्यक्ति और हर तरह की बुराई से पाक (पवित्र) थे। आप ने किसी भी बुराई को अपने जीवन में प्रवेश नहीं होने दिया। आपके अन्दर प्रत्येक समय अच्छी बातों का ही समावेश होता। दयालुता आपके हृदय में कूट-कूट कर भरी थी। पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद साबह प्रत्येक समय आख़िरत की सोच में लगे रहते तथा सदैव इस काम में चिन्तित रहा करते कि समाज का बिगड़ा हुआ मनुष्य संसार के मायाजाल को छोड़कर और अपनी वासनाओं से मुक्त होकर एक अल्लाह (ईश्वर) का पुजारी बन जाये और उसके अन्दर से हर तरह की बुराइयां समाप्त हो जायें।

रसूलुल्लाह सल्ल० बिना ज़रूरत के मुख से कोई बात न निकालते। बातचीत में सदैव स्पष्ट उच्चारण तथा बात साफ-साफ करते। आप बहुत ही कोमल प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आप ने अपने जीवन में किसी को अपमानित नहीं किया और न स्वयं ही अपमान पसन्द करते। खाने पीने की चीज़ों की बुराई न करते और अपने साथियों (सहाबियों) को हमेशा इस बात से मना करते रहते। संसार से सम्बन्धित सभी कामों पर आपको कभी क्रोध न आता परन्तु जब किसी का अधिकार छीन लिया जाता तो उस समय आपके शौर्य के सामने कोई वस्तु रूक नहीं सकती थी। जब तक आप उसका बदला न ले लेते।

पैग़म्बर साहब अपने स्वभाव से किसी को अपशब्द न कहते और न ही हंसी मज़ाक में गन्दे अपशब्दों का प्रयोग करते। बाजारों में भी आप कभी तेज़ (बुलन्द) आवाज़ न फरमाते। बुराई का बदला क्षमा के द्वारा देते। आपने अपने जीवन में कभी घर व घर के बाहर किसी पर हाथ नहीं उठाया सिवाये उसके कि जब सत्य पर आंच आवे। आपके सामने जब कभी दो वस्तुएं होती तो सदैव आसान वस्तु का चयन करते। आप लोगों की दिलदारी फरमाते। आपने कभी किसी का दिल नहीं दुखाया। आप अच्छी बात का अच्छी तरह बयान (प्रशंसा) करते और उसमें बल प्रदान करते और बुरे कामों की बुराई करते। आपका व्यवहार सदैव एक सा रहता। कभी किसी बात से गाफ़िल न होते। परोपकारी तथा अच्छे आचरण का व्यक्ति आपकी दृष्टि में सबसे उत्कृष्ट होता। दूसरों का दुःख बांटने वालों, दूसरों की, सहायता करने वालों तथा सत्य बातों पर अनुसरण करने वालों की आप सबसे जियादा क़द्र करते। अल्लाह (ईश्वर) की बड़ाई करते समय आप खड़े हो जाते।

यदि कोई व्यक्ति आपको किसी उद्देश्य से बैठा लेता या कोई आवश्यक बात आप से करता तो आप बड़े धैर्य से उसकी बात सुनते। यदि कोई व्यक्ति आपसे कुछ मदद चाहता, तो बिना उसकी मदद किये उसे वापस न करते। आप अक्सर अपने साथियों से यह बात कहा करते कि "यदि कोई व्यक्ति अपनी फ़रयाद लेकर आये तो उसको पूरा किया जाये।" आप सदा प्रसन्नचित मुद्रा में रहा करते थे।

अल्लाह से लगाव (समीपता):-

हालांकि अल्लाह ने आपको अपना प्रिय सन्देश वाहक बनाकर इस संसार में भेजा था। पैग़म्बर साहब अल्लाह के मासूम (निष्पाप) बन्दे और उसके रसूल थे। अल्लाह ने उनके सारे पापों को क्षमा कर दिया था, फिर भी आप अल्लाह की इबादत में सबसे अधिक प्रयत्नशील रहते। रसूलुल्लाह सल्ल० रात में नमाज़ के लिए खड़े होते तो कभी एक ही आयत को बार-बार पढ़ते यहां तक की उसी में सुबह हो जाती। नमाज़ में आपकी हालत ऐसी हो जाती कि अल्लाह की याद में आप अपने को भूल जाते। आप के रोज़ों के बारे में हज़रत आइशा फ़रमाती हैं कि आप जब रोज़ा रखते तो उसकी अधिकता देखकर हम लोग कहते कि शायद अब आप सदैव रोजा रखेंगे, जब रोज़ा न होते तो हम सोचते कि शायद अब आप रोजा न रखेंगे।"

निःस्वार्थ भावना :-

रसूलुल्लाह सल्ल० अपने जीवन

के सभी कामों को निःस्वार्थ भाव से करते। जो आप से जितना क़रीबी (निकटतम) होता खतरे के कामों व आज़माइशों में उसे सबसे आगे रखते। युद्ध में विजय के उपरान्त जो माले ग़नीमत प्राप्त होता उसे सबसे पहले दूर के लोगों में बाँटते तथा बाद में अपने सम्बन्धियों को देते।

जब एक अवसर पर उत्बा, शोबा तथा वलीद ने कुरैश को ललकारा था, उस समय पैग़म्बर साहब ने अपने अति निकट के व्यक्तियों में से हमज़ा, अ़ली और उबैदा को ही आवाज़ दी तथा उनके मुकाबले में भेजा था। हालांकि मुजाहिदीन में ऐसे वीर योद्धा उस समय उपस्थित थे, जो उनसे दो–दो हाथ कर सकते थे परन्तु बनू हाशिम के ये तीनों व्यक्ति आपसे अति निकट थे। इस्लाम धर्म में जब ब्याज को हराम कर दिया गया तो पैग़म्बर साहब ने सर्वप्रथम अपने चचा अबू तालिब के पास जाकर ब्याज को हराम बताया था। पैग़म्बर साहब ने आम बादशाहों की तरह ऐसा काम नहीं किया जिसमें परिवार तथा सम्बन्धियों को आगे रखा गया है।

दया तथा सहिष्णुता की भावनाः–

इस्लाम धर्म के पैग़म्बर हज़रत मो० साहब के पूरे जीवन में दया का पूर्ण रूप से प्रभाव था। क्षमा, सहिष्णुता के बारे में आपके अतिरिक्त कोई दूसरा उदाहरण ही नहीं मिलता है। आपके जीवन की प्रमुख घटनाओं से प्रतीत होता है कि आप दया के सागर थे। आपकी दया दृष्टि से ही बड़े से बड़े शत्रु के साथ भी एहसान का बरताव था जब मुनाफिकों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई को कब्र में उतारा गया तो आप उस समय वहां पर मौजूद थे। उसको अपनी कमीज़ पहनाई थी। आपकी सहिष्णुता (हमदर्दी) आपके साथियों की अपेक्षा कहीं अधिक थी यद्यपि वे बड़े धैर्यवान थे। आप रसूलल्लाह सल्ल० सबके लिए एक उच्चकोटि के गुरू व महान समाज सुधारक के रूप में थे।

आपकी सहनशीलता की भावना का अन्दाज़ा उस घटना से लगाया जा सकता है, जब आप ताइफ़ नगर के लोगों द्वारा कितना प्रताणित किये गये, फिर भी आपने सब को क्षमा कर दिया तथा उनके मार्गदर्शन हेतु ईश्वर से प्रार्थना भी की। यह दया की भावना आप सबके साथ रखते यदि कोई गुलाम कुछ काम भूल जाता फिर भी आप उसे माफ कर देते। यदि आपके पास कोई ज़रूरतमन्द आता तो आप उससे वादा ज़रूर करते अगर आपके पास कुछ होता तो उसी समय ज़रूरत पूरी करते।

विनम्र स्वभाव की रसूलुल्लाह सल्ल० के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। आप इस बात को अच्छा नहीं समझते थे कि लोग आपकी प्रशंसा बहुत बढ़ाकर करें, जैसे पिछले पैग़म्बरों के साथ लोग करते थे। आपके साथियों में से यदि कोई साथी आपको देखकर खड़ा हो जाता तो आप उसकी इस आदत को पसन्द नहीं करते।

लोगों ने रसूलुल्लाह सल्ल० को सर्वश्रेष्ठ बताया तो आपने कहा यह स्थान हमारे पूर्वज हज़रत इब्राहीम(अ०) का है। अपने एक भाषण में पैगम्बर साहब ने कहा कि "मेरी तारीफ़ इस प्रकार न किया करो जिस प्रकार ईसा मसीह की उम्मत किया करती थी। मैं तो मात्र अल्लाह का एक सेवक हूं। तुम मुझे अल्लाह का बन्दा (सेवक) और उसका रसूल (सन्देश वाहक) समझो"। हज़रत पैग़म्बर साहब को इस बात से कोई परेशानी तथा संकोच न होता कि आप किसी दास या विधवा के साथ उसके काम से चलें।

पैग़म्बर साहब के पड़ोस में कोई बीमार हो जाता तो उसको देखने जाते यदि किसी यहूदी के यहां कोई मर जाता तो उसको देखने जाते। अगर कोई मिट्टी (शव) जा रही होती तो आप खड़े हो जाते। यदि कोई गुलाम दावत कर लेता तो आप उसे कुबूल फ़रमा लेते।

वीर किन्तु सुशील :–

रसूलुल्लाह सल्ल० के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता थी कि वो वीरता के साथ–साथ बहुत ही सुशील भी थे। जो वस्तु आपको अप्रिय लगती उसका प्रभाव आपके चेहरे से प्रतीत हो जाता। किसी के सामने ऐसी बात न करते जो किसी भी व्यक्ति को अप्रिय लगे। जब आपको किसी के बारे में कोई बुराई की सूचना मिलती तो आप उसका नाम लेकर न कहते कि कहीं उसे बुरी न लगे तथा इस बात को इस्लाम धर्म में मना किया गया है।

अमुक बात को आप इस प्रकार से कहते कि लोगों को क्या हो गया है कि वह ऐसा कहते हैं या करते हैं। आप किसी बात का विरोध करते तो उसके नाम का उल्लेख न करते।

घमासान युद्ध के समय आपकी वीरता का परिचय आपकी आंखों से ही लग जाता था । बद्र के युद्ध में शत्रु के सबसे निकट पैग़म्बर साहब ही थे।

बहादुरी के साथ–साथ आप अत्यन्त नर्म हृदय व्यक्ति थे। कमज़ोर लोगों तथा जानवरों के साथ आप नम्रता का व्यवहार करने का आदेश देते। पैग़म्बर साहब अक्सर कहा करते कि अल्लाह ने प्रत्येक वस्तु के साथ अच्छा तथा नर्म बर्ताव करने का आदेश दिया है। रसूलुल्लाह सल्ल० अपने साथियों को निर्देश देते रहते कि मनुष्यों के साथ–साथ जानवरों के चारा पानी का भी ख्याल रखा जाये तथा उनको सताने, उनके ऊपर शक्ति से अधिक बोझा लादने को आपने मना किया है। जानवरों को आराम से रखने को सवाब (पुण्य) का काम तथा ईश्वर की समीपता का साधन बताया। पैग़म्बर साहब का गुजर एक बार एक ऐसे रास्ते से हुआ, जहां पर एक ऊंट दुबलेपन के कारण अस्थिपंजर प्रतीत हो रहा था, आपने उसे देखकर कहा, "इस प्रकार के पशुओं के बारे में ईश्वर के प्रकोप से बचो।"

महान परोपकारी व्यक्ति :–

यही नहीं पैग़म्बर साहब महान परोपकारी व्यक्ति थे। आपने अपना सारा जीवन परोपकार में लगा दिया था। किसी भी काम करने में आपको कितनी कठिनाई क्यों न सहन करनी पड़ती परन्तु आप बिना किसी क्रोध के उसे पूरा करते। प्रत्येक कार्य के बारे में आपका यह हाल था कि आप सोचते थे कि इस काम से मेरा नहीं बल्कि किसी दूसरे पड़ोसी का ही लाभ हो जाय आप अनाथों, विधवाओं तथा निर्धनों का कार्य बड़ी तत्परता से करते। उनके काम में किसी को शिकायत न आती।

आपने नौकरों, मज़दूरों के साथ उनके मालिकों को सद्व्यवहार की शिक्षा दी । रसूलुल्लाह सल्ल० अक्सर यह कहा जरते, "कि अपने दासों को जिनको अल्लाह ने तुम्हारे अधीन किया है वह तुम्हारे सहायक हैं। चाहिए जो स्वयं खायें वह उन्हें खिलायें और जो स्वयं पहने वह उन्हें पहनाएं। उनके ऊपर ऐसा काम न डालो जो उनकी शक्ति से बाहर हो।" दासों के प्रति उनके स्वामियों को आपने बहुत ही महत्वपूर्ण निर्देश दिये हैं कि उनके साथ किसी प्रकार की सख्ती न की जाये और उनके प्रति सहानुभूति प्रकट करना चाहिए। क्योंकि ईश्वर महान है वह जिसको चाहे दास और जिसको चाहे पल भर में स्वामी बना दे। यह काम अल्लाह के लिए बिल्कुल आसान है।

रसूलुल्लाह सल्ल० के एक साथी (सहाबी) ने आपसे कहा कि मेरा दास गलती करता है मैं उसको क्षमा कर देता हूं। फिर भी वह गलती करता है फिर भी मैं क्षमा कर देतो हूं। मैं अपने सेवक को कितने बार क्षमा किया करूं। रसूलुल्लाह सल्ल० ने जवाब दिया, "स्वामी अपने नौकर को दिन भर में सत्तर बार क्षमा किया करे।" आपके वही साथी कहते हैं कि पैग़म्बर साहब ने मुझे आदेश दिया कि "मज़दूर को उसकी मज़दूरी पसीना सूखने से पहले दे दो।"

सांसारिक माया मोह से दूरः–

रसूलुल्लाह सल्ल० ने समाज के सभी व्यक्तियों को सांसारिक माया मोह से मना किया तथा स्वयं भी इससे परहेज करते थे। व्यक्ति का निवास जो मृत्यु के बाद उसे प्राप्त होगा उसकी ओर अधिक ध्यान देते और लोगों को उसी जीवन हेतु सुकर्म की ओर अधिक बल देते जिसके अनुसार व्यक्ति को सफलता प्राप्त होगी।

पैग़म्बर साहब के पास दिन भर में हजारों दिरहम आता परन्तु आप उसका प्रयोग समाज के अनाथों, निर्धनों, विधवाओं तथा समाज सुधार के अन्य कामों में व्यय कर देते आप सांसारिक माया मोह से इतनी दूर थे जिसका अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता है। यदि आप चाहे तों राजसी, वैभवशाली, आनन्दमयी जीवन व्यतीत कर सकते थे, परन्तु आपने साधारण जीवन पसन्द किया, गरीबी का जीवन पसन्द किया, सादगी का जीवन स्वीकार किया। यहां तक कि आपके यहां कई–कई दिनों तक चूल्हे में आग न जाती, फिर भी आपको जो भी धन प्राप्त होता उसे गरीबों में बांट देते। मुसलमानों को इस बात से मना किया कि धन इकट्ठा किया जाये।

अगर कोई व्यक्ति पैग़म्बर साहब से धन एकत्र करने के बारे में पूछता तो आप कहते यह वह लोग हैं जिनको सांसारिक आराम यहीं दे दिया गया है आराम का जीवन न अपने लिए पसन्द करते न अपने परिवार वालों के लिए आप अपनी दुआओं में अक्सर यह मांगा करते कि "ऐ अल्लाह ! परिवार वालों का खाना–पानी (भोजन सामग्री) मात्र आवश्यकतानुसार दे।

रसूलुल्लाह सल्ल० के परिवार में इतनी तीव्र निर्धनता होने पर भी आप (पैग़म्बर साहब) मात्र आवश्यकतानुसार खाना–पानी (भोजन सामग्री) के लिए अल्लाह से दुआ करते ह० आयशा रजि० ने इस बात का वर्णन किया है कि हमारे यहां लगातार

(शेष पृष्ठ १५ पर)

आपकी समस्याएँ और उनका हल

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रश्न : दूध पीते हुए बच्चे की कै पाक है या नापाक। अगर नापाक है तो बड़ी नजासत है या छोटी नजासत?

उत्तर : छोटा दूध पीता बच्चा या बड़ा आदमी अगर मुंह भर कर कै करे तो वह नापाक है और बड़ी नजासत है, कपड़े पर या बदन पर लग जाए तो धोना ज़रूरी है हां अगर मुंह भर कर न हो थोड़ी सी कै हो; जिससे वुजू नहीं टूटता तो वह नापाक नहीं।

(फ़तावा रहीमिया भाग – २)

प्रश्न : अगर कान या आंख में दर्द व तकलीफ हो और उस वक्त कान या आंख से मवाद या पानी निकले और निकल कर बाहर आ जाए तो वुजू टूटे गा या नहीं ? ऐसी हालत में नमाज़ पढ़ली हो तो क्या हुक्म है।

उत्तर : अगर कान या आंख में कुछ दर्द या तकलीफ हो और उस वक्त कान या आंख से मवाद या पानी निकलता है। और ऐसी जगह तक आ जाए कि जिस का वुजू या गुस्ल में धोना ज़रूरी है तो उससे वुजू टूट जाएगा और बिना दोबारा वुजू किये पढ़ना सहीह न होगा पढ़ लिया हो तो दोहराना ज़रूरी है और अगर कुछ दर्द व तकलीफ न हो और ऐसे ही पानी निकले तो उससे वुजू नहीं टूटता।

(दुर्रे मुख्तार, शामी भाग एक १३७)

प्रश्न : हमारे यहां मशहूर है कि छोटा बच्चा जो केवल दूध पीता हो खाना खाना शुरू न किया हो वह बच्चा चाहे लड़की हो या लड़का उसका पेशाब नापाक नहीं है यही वजह है कि छोटे बच्चे अगर कपड़ों पर पेशाब कर देते हैं तो बच्चे की मां बहन आदि उसके धोने को जरूरी नहीं समझती क्या यह सही है ?

उत्तर : यह सोचना बिलकुल ग़लत है ऐसे दूध पीते बच्चे (लड़की हो या लड़का) का पेशाब नापाक है, और मुफ़्ती हज़रात ने इसको बड़ी नापाकी में शुमार किया है। इस लिए अगर बच्चा कपड़े पर पेशाब कर दे तो उसका धोना ज़रूरी है और अगर बदन पर लग गया तो बदन पाक करना भी जरूरी है। अगर कपड़ा और बदन पाक किये बिना नमाज पढ़ी जाएगी तो नमाज़ सही न होगी लौटाना ज़रूरी होगा।

इसी तरह नजासते ग़लीज़ा (बड़ी नापाकी) जो बहने वाली हो फैलाव में रुपये के सिक्के के बराबर मुआफ है जैसे वह जानवर जिनका गोश्त न खाया जाता हो उनका पेशाब, चाहे ऐसे छोटे बच्चे का पेशाब हो जिसने खाना शुरू न किया हो। (दुर्रेमुख्तात, शामी)

निजासते गलीज़ा (बड़ी नापाकी) जैसे शराब और उन जानवरों का पेशाब जिनका गोश्त नहीं खाया जाता जैसे आदमी का पेशाब चाहे छोटे दूध पीते बच्चे का पेशाब हो जो खाता नहीं है वह लड़का हो या लड़की। इसी तरह फ़तावा आलम गीरी में है छोटे लड़के और लड़की का पेशाब, उसने खाना शुरू किया हो या न किया हो निजासते गलीज़: है।

(आलमगीरी भाग १ पेज नं० २८)

इसी प्रकार हिदाया अव्वलीन में है। निजासते गलीजा (जो बहने वाली हो फैलाव में) एक दिरहम की मिकदार या उससे कम हो तो माफ है जैसे – खून, पेशाब, और शराब (हाशिये में है पेशाब चाहे ऐसे छोटे बच्चे का हो जो खाता न हो।

(हिदाया भाग एक पेज नं० ५८ हाशिया १३)

प्रश्न : हमारे यहां गोबर को सुखाकर जलाते हैं जब वह जल कर राख बनजाए तो वह पाक है या नापाक ?

उत्तर : गोबर जब जलकर राख हो जाता है तो उसकी हक़ीक़त उसका नाम और गुण सब बदल जाता है इसलिए राख पाक समझी जाएगी।

(दुर्रे मुख्तार व शामी भाग एक पेज नं० ३१)

प्रश्न : एक मसला पूछना है ? एक व्यक्ति के लड़के लड़कियां बड़े हो गये हैं और उसका मकान बहुत छोटा है तमाम बच्चे उसी मकान में रहते हैं । . ..... कभी कभी रात में मियां बीवी को नहाने की ज़रूरत पड़ जाती है, मगर मकान के तन्ग और बच्चों के बेदार हो जाने की वजह से शर्म व हया की बिना पर वह रात में गुस्ल नहीं करते केवल तयम्मुम कर लेते हैं और सुबह को गुस्ल करते हैं तो ऐसा करना कैसा है ?

उत्तर : रात को नहाने की ज़रूरत

आ जाने पर ऊपरी नापाकी धोकर वुजू कर के सो जाए मगर फर्ज़ की नमाज़ से पहले गुस्ल करके नमाज़ अदा करना ज़रूरी है नमाज़ कज़ा करना जाइज़ नहीं ऐसी हया शर्म जाइज़ नहीं जिसकी वहज से फर्ज़ नमाज़ कज़ा हो जाए रात को किसी वक्त भी गुस्ल कर लिया जाय।

प्रश्न : एक फोड़ा निकल आया है उससे खून पीप निकलता है इस वजह से उस पर रूई रखकर पट्टी बांध दी है। अन्दर – अन्दर खून निकलता रहता है पट्टी की वजह से बाहर नहीं निकलता तो उससे वुजू टूट जाएगा या नहीं ?

उत्तर : अगर इतना खून निकले कि उसे रोका न जा सके और ज़ख्म की जगह से आगे बढ़ जाय तो वुजू टूट जाएगा।

प्रश्न : कागज़ से इस्तिन्जा करना जाइज़ है या नहीं हमारे यहां इस के लिए एक खास किस्म का कागज़ होता है।

उत्तर : कागज़ से इस्तिन्जा जाइज़ नहीं और जो कागज़ खास इस्तिन्जा ही के लिए तैयार किया जाता है उसके इस्तेमाल की भी आम इजाज़त नहीं मगर मजबूरन जैसे हवाई जहाज़ में पानी न मिलता हो और वहां उससे इस्तिन्जा करने पर मजबूर हो जाता हो तो ऐसे वक्त में इस्तेमाल करने की हैं गुन्जाइश है।

(फ़तावा रहीमिया भाग ४–२७३)

प्रश्न : एक व्यक्ति है उसको पेशाब के कतरे आते रहते हैं इलाज भी बहुत कराया मगर कोई फायदा नहीं उसकी वजह से वह बहुत परेशान रहता है इस्तिन्जा में भी बहुत वक्त लग जाता है इसके बावजूद भी शक रहता है नमाज़ की हालत में भी कतरे के टपक जाने का वसवसा होता है यह व्यक्ति माजूर होगा या नहीं इसके लिए शरीअत में कुछ छूट हैं या नहीं?

उत्तर : अगर किसी को पेशाब का कतरा कम ज़ियादह आता रहता है मगर नमाज़ का पूरा वक्त नहीं घिरता इतना वक्त मिल जाता है कि पाकी की हालत में नमाज़ अदा कर सके तो वह माजूर नहीं है। उसको चाहिए कि कतरा रुक जाने का इन्तिज़ार करे फिर वुजू कर के नमाज पढ़ ले अगर नमाज़ पढ़ते हुए क़तरा आने का शक हो जाए तो नमाज़ तोड़कर वह जगह देख ले और अगर हक़ीक़त में क़तरा है तो शर्मगाह पानी से धोए और वुजू करके कपड़ा बदल कर नमाज़ पढ़े अगर कतरा न आया हो केवल शक ही हो तो आइन्दा इस तरह के शक की परवाह न करे बल्कि वुजू करने के बाद इस्तिन्जा की जगह वाले कपड़े पर थोड़ा पानी छिड़क दे ताकि शक न रहे और अगर कतरा आता रहता है और इतना वक्त भी न मिले कि पाकी के साथ उस वक्त की नमाज़ अदा कर सके तो वह माजूर होगा।

ऐसा माजूर हर नमाज़ के वक्त वुजू करके पाक कपड़ा पहनकर फर्ज़, वाजिब, सुन्नत, नफ़्ल जो चाहे पढ़ सकता है जब तक उस नमाज़ का वक्त बाक़ी रहेगा कतरा आने से वुजू नहीं टूटेगा (मगर किसी दूसरी वजह से टूट जाएगा)।

इसी तरह कभी कभी कतरा आ जाना भी माजूर बने रहने के लिए काफी है हां अगर नमाज का एक वक्त पूरा ऐसा गुज़र जाए कि उसमें एक बार भी कतरा न आए तो अब वह माजूर न रहेगा।

(फ़तवा रहीमिया भाग ४)

ख़बर दे गया है ख़बर देने वाला
दया पाएगा हर दया करने वाला
दया तुम करो पृथ्वी वासियों पर
करेगा दया तुम पे आकाश वाला

(Shop) : 266408
(Resi.) : 260884

Iqbal & Co.

Dealer :
FRIEND EMBROIDERY MACHINE

Dealer in :
Embroidery Raw Materials Machine & Spare parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala Police Chowki, Chowk, Lucknow- 2260063

नींद उचाट क्यों होती है ?

हबीबुल्लाह आज़मी

आपने अक्सर लोगों को यह कहते सुना होगा कि हमारी नींद उड़ गई, नींद की गोलयां भी बेअसर रहीं। अधिक पैसा कमाया फिर भी संतोश नहीं ।

तजुर्बे में आया है कि जिन्हें नींद नहीं आती रात रात भर करवटें बदलबदल गुजार देते हैं, प्रातः अपनी लाल लाल आंखों के साथ उठते हैं और अपने काम पर चले जाते हैं। रात भर सो न पाने के कारण काम में मन नहीं लगता, दिमाग़ी काम में बार बार ग़लतियां होती हैं।

ऐसा क्यों होता है ?

प्रकृति ने जागने और सोने के नियम बनाए हैं और इनकी बीच संतुलन आवश्यक है। हर चीज़ के दो पक्ष होते हैं जमीन है तो आसमान बनाया, सर्दी है तो गर्मी का भी मौसम आना है, चांद है तो सूरज का वजूद पहले से है। नेकी है तो बुराई की शक्तियां भी सक्रिय हैं। इनसब में संतुलन होना स्वाभाविक है। यदि संतुलन बिगड़ गया तो ख़राबियां उत्पन्न होनी ज़रूरी हैं। दिन और रात इसी लि बनाए गए हैं कि इंसान दिन में काम करे तो रात में आराम करके अपनी थकान दूर करे।

मनोवैज्ञानिकों ने नींद न आने के बहुत से कारण बताए हैं जैसे अगर आप का घर रेलवे स्टेशन के निकट हो या उसके पास से रेलवे लाइन गुज़रती हो तो आप को गहरी नींद नहीं आएगी बार बार नींद खुल जाएगी। या आप का किसी साथी या दोस्त से झगड़ा हो गया हो या अफ़सर से कहा सुनी हो गई हो तो चिन्ता की बात नहीं है क्योंकि समय के साथ यह अवस्था समाप्त हो जाती है। यह एक अस्थाई अवस्था है।

चिन्ता की बात जब है जब लोग हफ़्तों तक नींद न आने कि बीमारी का शिकार रहते हैं। यह इसलिए होता है कि आप शारीरिक तौर पर स्वस्थ नहीं होते या आपका अपनी बीवी या शौहर से झगड़ा होता रहता है। बेरोजगारी भी इस का एक मुख्य कारण है। जब यह दशा महीनों या सालों पर फैल जाए तो यह नींद न आने की गम्भीर बीमारी का रूप धारण कर लेती है। फिर इसके लिए आप को डाक्टरों और खासतौर से मनोवैज्ञानिक चिकित्सकों की तरफ़ रूजु हो ना चाहिए।

नींद की आवश्यकता :

वर्षों के तजुर्बे और अनुसंधान के बाद स्वास्थ विशेषज्ञों ने हर उम्र के लोगों के लिए रोज़ाना औसत नींद की आवश्यकता मालूम की है। उम्र के अनुसार नींद की ज़रूरत का चार्ट निम्नवत है :–

आप की उम्र	नींद की आवश्यकता घंटों में
दस साल से कम	६ से १२ घंटे
दस से बीस साल	७ से ८ घंटे
बीस से तीस साल	६ से ७ घंटे
तीस साल के बाद	६ से ६ १/२ घंटे

आप अपनी उम्र के अनुसार नींद की आवश्यकता को देख लें और पूरी कोशिश करें कि आप उतने घंटे ज़रूर सोएं।

नींद आवर दवाएं :– "नींद लाने वाली दवाएं अच्छी नींद की दुश्मन हैं" अमरीका के मनोवैज्ञानिक संस्थान के निदेशक डा० स्मिथ के अनुसार "जब तक आप नींद के लिए नींद लाने वाली दवाएं इस्तेमाल करेंगे, आप नींद की राह में रूकावटें खड़ी करते रहेंगे" डा० स्मिथ का यह विचार चौकाने वाला है परन्तु यह हक़ीक़त है। हर डाक्टर और विशेषज्ञा का विचार है कि नींद की दवाएं स्नायिक व्यवस्था (**Nervous System**) को गम्भीर रूप से प्रभावित करती हैं और दूसरी ओर नींद की जरूरत को बढ़ाती रहती हैं क्योंकि स्नायिक तंत्र शिथिल हो जाते हैं आदमी पर गुनूदगी तारी हो जाती है परन्तु पूरी नींद नहीं आती।

रात को देर से सोना :

प्रकृति ने जीवन व्यतीत करने के तरीके बनाए हैं जो मानव स्वभाव के अनुकूल हैं दिन काम करने और रात आराम करने के लिए बनाई गई है। यही सबसे अच्छा सिद्धान्त है। बहुदा देखा गया है कि लोग रात को देर से सोते हैं और प्रातः जल्द उठ जाते हैं ऐसे लोग असंतुष्ट और उदासीन जीवन व्यतीत करते हैं।

अच्छी नींद कब आएगी :

१. रात के खाने में भोजन सादा

हो, चिकनाहट कम से कम हो। इस प्रकार पाचन शक्ति पर बोझ कम पड़ेगा और दिमाग़ पूरी तरह आराम कर सकेगा।

२. सोने और जागने के लिए समय निश्चित कर लें और उस पर पूरी तरह अमल करें।

३. शाम के समय हलकी फुलकी कसरत करें या रात को खाने के बाद चलह क़दमी को ज़रूरी बना लें आप चुस्त दुरुस्त रहेंगे।

४. नशा लाने वाली दवाएं बिलकुल प्रयोग न करें।

५. यदि सम्भव हो तो सोने से पहले गर्म पानी से नहा लें। नहाने के बाद हलके फुलके कपड़े पहन कर सो जाएं।

६. अपने कमरे का तापमान, रोशनी की कमी, बेशी और शोरोगुल का ध्यान रखें। आपके सोने का कमरा शान्ति और शोरोगुल से दूर हो।

इस्लामी शिक्षा में भी इन बातों को भलीभांति दर्शाया गया है। इस्लाम में नशा हराम है। नशा आवर चीज़ों में तम्बाकू से लेकर शराब, कुकीन, हिरोईन, मेंडेक्स आदि आती हैं। यह तमाम चीज़ों के सेवन से सनाय तंत्र बुरीतरह प्रभावित होता है और इनके सेवन से धीरे धीरे नींद उचाट होने लगती है और नींद आने की शिकायत हो जाती है। लोगों को भ्रम है कि तम्बाकू अथवा बीड़ी सिग्रेट नशाआवर चीज़ों में नहीं आती परन्तु यह नितांत ग़लत है। तम्बाकू में निकोटीन पाई जाती है जिसको डाक्टर लोग "जहर" कहते हैं जो धीरे धीरे असर करता है और इसके अधिक सेवन से रात की नींद उड़ जाती है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है कि रात को जल्द सोओ और प्रातः सवेरे नमाज़ के लिए उठो, कम खाना नबी की सुन्नत है। हदीस के अनुसार आप (सल्ल०) कभी कभी सैर के लिए भी तशरीफ़ ले जाते थे। इन सभी बातों पर अमल करने से नियमित रूप से अच्छी नींद आएगी और इंसान का स्वास्थ ठीक रहेगा।

(पृष्ठ ३१ का शेष)

जानवरों का चारा है। (रावी कहते हैं कि) पस हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (हम लोगों से) फ़रमाया कि इन दोनों से इस्तिंजा मत किया करो इस लिए कि यह दोनों तुम्हारे (जिन) भाइयों की ग़िज़ा हैं। (पाखाना पेशाब के बाद निकलने की जगह को पवित्र करने को इस्तिंजा करना कहते हैं)

उक्त हदीसों से निम्न बातें मालूम हुईं :–

१. हड्डी और गोबर (अरौसा) जिन्नों की ग़िज़ा हैं।

२. मुस्लिम जिन्नों की ग़िज़ा उसी हड्डी पर है जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो। (अल्लाह का नाम लेने के दो अर्थ हो सकते हैं एक तो यह कि हड्डी पर बिस्मिल्लाह पढ़ी जाए, दूसरे यह कि वह हड्डी उस जानवर की हो सिज पर अल्लाह का नाम लेकर जब्ह किया गया हो। वल्लाहु अअ़लम बिस्सवाब)

३. लीद और गोबर (अरौसा वलबिअ़रः) जिन्नों की सवारियों की ग़िज़ा हैं।

४. जिन्नों ही में कुछ जिन्न सवारी का काम देते हैं जिन पर दूसरे जिन्न सवारी करते हैं यह मुस्लिम की एक रिवायत से ज्ञात हुआ जो पीछे आ चुकी है।

(पृष्ठ ३६ का शेष)

"अगर हक़ उनके मनमाने दिलों के पीछे चल पड़े तो आकाश और पृथ्वी और इन दोनों में जो कुछ है। बरबाद होकर रह जायें।" (मोमिनून–७१)

इसलिए हमें बस उसी पथ पर चलना होगा जो ईश्वर ने हमें अपने देवदूत के जरिये बता दिये हैं। पवित्र कुरआन में है।

यह सीधा पथ है। इसी पर चलो दूसरे मार्गों पर मत चलो यदि दूसरे मार्गों पर चलोगे तो तुम अपने सच्चे पथ से विचलित हो जाओगे। (अनआम–१५३)

इस आयत में जिस पथ पर चलने की प्रेरणा दी गयी है। वही ईश्वरीय पथ है। ईश्वर तक पहुंचा देने वाला मार्ग है। ईश्वरी पथ पर चलने से आत्मा को शान्ति मिलेगी और मृत्यु के पश्चात भी इन्शाअल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) सदा के लिए शान्ति ही शान्ति मिलेगी। ईश्वर हमसे प्रसन्न होगा और हम भी ईश्वरीय दर्शन से प्रसन्न होंगे।

अल्लाह से प्रार्थना है कि वह हम सभी को जहन्नम (नरक) से बचाए और जन्नत (स्वर्ग) का मार्ग आसान फ़रमाये।

जो गया मुल्के अ़दम
यां नहीं आने का फिर।
पंज रोज़ा ज़िन्दगी,
कोई नहीं पाने का फिर।।

आप को यह सच्चा राही कैसा लगा अवश्य लिखें। हम आपके परामर्शों का स्वागत करेंगे।

लेखकों से अनुरोध है कि वह सरल भाषा में लिख करें ।

– सम्पादक

जिन्नात का परिचय

अबू मर्गूब

जिन्नों का आहार

क्या जिन्न खाते पीते भी हैं ? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। इसलिए कि जिन फ़िरिश्ते तो हैं नहीं। क़ुर्आन मजीद में जिन्नों और फ़िरिश्तों का उल्लेख अलग अलग है। गुज़र चुका कि जिन्न आग से पैदा किये गये जब कि हदीस से सिद्ध है कि फ़िरिश्ते नूर पैदा किये गये।

सहीह मुस्लिम में किताबुज़्ज़ुहद में हज़रत आइशा (रज़ि०) से वर्णित है कि फिरिश्ते नूर से पैदा किये गये, जिन आग से पैदा किये गये और आदम उस से पैदा किये गये जिस से तुम को बताया।

एक दूसरी हदीस में आ चुका है कि आदम मिट्टी से पैदा किये गये यहां उसी की ओर संकेत है। और क़ुर्आन मजीद से स्पष्ट है कि आदम (अ०) मिट्टी से पैदा किये गये : व लक़द् ख़लक्नल् इन्सान मिन् सल्सालिन् मिन् हमइम्मस्नून (४६:२४) और हमने इन्सान को बजती हुई मिट्टी से बनाया जो सड़े हुए गारे से बनी थी।

फ़िरिश्तों के विषय में ज्ञात है कि न वह खाते पीते हैं न उनमें सन्तानिक प्रणाली है न ही उनमें नर मादा हैं जैसा कि इब्नि हजर ने फ़त्हुलबारी जिल्द ६ पृष्ठ ३०६ पर रबीअुल अब्रार के सन्दर्भ से सईद इब्नुल मुसय्यिब से यह बात लिखी है। पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध है कि फ़िरिश्ते अवज्ञा (नाफ़र्मानी) नहीं करते ''ला यअ़सूनल्लाह मा अमरहुम व यफ़अ़लून मा युअमरून् (६६:६) (वह लोग, अल्लाह जो हुक्म देता है उसके ख़िलाफ़ नहीं करते और वही करते हैं जिस का उनको हुक्म दिया जाता है।) लेकिन जिन्नों के विषय में सिद्ध है कि वह इन्सानों की भांति शरीअ़त (इस्लामिक विधान) के मुकल्लफ़ (भारित) हैं। अर्थात शरीअ़त उन पर लागू है। उनके सन्तान भी होती है और वह खाते पीते भी हैं। अब जानना है कि वह क्या खाते हैं और किस प्रकार खाते हैं ?

प्रत्यक्ष रूप से तो यही लगता है कि उनका जिस्म जब न दिखाई देने वाली आग से बना है और अनुभव में न आने वाले हैं तो उनका आहार माद्दा (डंजतपंस) न होगा जो ख़ाकी (मिट्टी के) जिस्म वालों का आहार है। न उनके लिये पाचन किया तथा मलमूत्र का वह नियम होगा जो हम मानव जाति के लिए है। लेकिन सहीह रिवायत में उनके खाने पीने का वर्णन है अतः हम को उन रिवायत के प्रकाश ही में कोई परिणाम निकालना है।

जिन्नों का आहार हड्डी और लीद

सहीह बुखारी में किताब मनाक़िबुलअन्सार में हज़रत अबू हुरैरा रजियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन को हुक्म दिया कि इस्तिंजे के लिए पत्थर के टुकड़े ले आएं और फ़रमाया कि न हड्डी लाए न लीद और जब हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि०) ने हड्डी और लीद मना करने का कारण पूछा तो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह दोनों चीज़ें जिन्नों की ग़िज़ा (आहार) हैं। और फ़रमाया कि मेरे पास ''नसीबैन'' के अच्छे जिन्नों का मण्डल (वफ़्द) आया और मुझ से अपनी ग़िज़ा (आहार) के बारे में पूछा, मैंने उनके लिये दुआ की कि '' ऐ अल्लाह यह जिस हड्डी या लीद के पास से गुज़रें, उन पर इनको अपनी ग़िज़ा मिल जाए।

तिर्मिज़ी बाबुत्तहारत में हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की एक हदीस में है। कि : लीद और हड्डी से इस्तिंजा मत करना इस लिए कि वह तुम्हारे भाई जिनों की ग़िज़ा है।

लीद और गोबर जिन्नों की सवारियों की ग़िज़ा हैं

सहीह मुस्लिम किताबुस्सलात में हैं कि हजरत अब्दुल्लाह इब्नि मसऊद (रज़ि०) ने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बयान फ़रमाया है कि आप ने फ़रमाया कि : मेरे पास एक बुलाने वाला जिन्न आया, मैं उसके साथ गया और उनको (अर्थात जिनों को) क़ुर्आन सुनाया (इब्नि मसऊद ने) कहाः फिर हमारे साथ हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम चले और हमको जिन्नों के आसार (चिन्ह) दिखाए। हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बताया कि जिन्नों ने आप से अपनी गिज़ज़ा के बारे में पूछा तो आपने फरमाया हर वह हड्डी जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो तुम्हारे हाथ में गोश्त बन जाएगी और हर मेंगनी तुम्हारे

(शेष पृष्ठ ३० पर)

तौबात

आसिफ़ अन्ज़ार

अल्लाह तआ़ला यह नहीं चाहते थे कि बनी इस्राईल पहली कौमों की तरह अल्लाह की किताब और उसकी हिदायत के बिना बरबाद हो जायें। और घोर अंधियारे में टामक टोइयां मारते फिरें।

अल्लाह तआ़ला ने मूसा अ़० को हुक्म दिया कि खूब पाक साफ होकर तीस रोज़े रखें। फिर सीना के तूर पूर्वत पर आएं ताकि वह अपने रब से बात कर सकें और एक किताब प्राप्त करें जो बनी इस्राईल के लिए हिदायत हो।

मूसा अ़० ने अपनी क़ौम के सत्तर लोगों को साथ कर लिया ताकि वो अल्लाह से बातचीत और किताब की प्राप्ति के गवाह रहें इसलिए कि बनी इस्राईल बहुत ज़ियादह आनाकानी करने वाली कौम थी।

और मूसा अ० ने अपने भाई हारून अ०से कहा कि मेरे बाद इन लोगों का प्रबन्ध करो और उनके सुधार का काम करते रहो और पाखन्डियों, फसादियों की राय के अनुसार काम न करना।"

मूसा अ० ने अपने भाई को यह आदेश दिया कि दुन्या के हर गिरोह के लिए एक प्रबन्धक का होना जरूरी है।

इसके बाद मूसा अ़० अपने पालनहार से मिलने तूर पर्वत की ओर चले। अल्लाह से मुलाकात और बात–चीत के शौक में हज़रत मूसा अ० तेज़–तेज़ आगे बढ़े और आनन–फानन तूर पर्वत पर पहुंच गये।

अल्लाह ने मूसा अ० से कहा "ऐ मूसा तुझे अपनी कौम के लोगों को छोड़ कर कौन सी चीज़ जल्दी ले आयी।

मूसा० ने कहा कि वह लोग भी मेरे पीछे–पीछे हैं। और मैंने ऐ रब। तेरी तरफ जल्दी इसलिए कि ताकि तू खुश हो जाय।"

तब अल्लाह ने मूसा अ० को तीस दिन के बजाय चालीस दिन की मुद्दत बिताने को कहा, चालीस दिन गुज़र जाने के पश्चात् मूसा अ० वादिये सैना के पर्वत तूर पर पहुंचे और अल्लाह तआ़ला से बात की। दुआएं मांगी उनको अल्लाह का कुर्ब प्राप्त हुआ इस चीज ने मूसा अ० के दिल की लगी और बढ़ा दी वह शौक़ के हाथों मजबूर होकर अल्लाह तआला से कहने लगे "ऐ पालनहार मैं आप को देखना चाहता हूं।"

अल्लाह तआ़ला जानते थे कि मूसा अ०में अल्लाह को देखने की ताकत नहीं इसलिए कि "अल्लाह तआ़ला को किसी की (दुन्यावी) निगाह नहीं देख सकती है और अल्लाह सब की निगाहों को देख लेता है और वह बहुत ही छोटी–छोटी चीज़ों को देखता है। और सब कुछ जानता है।"

बड़े–बड़े पर्वत भी उसके नूर का बोझ सहन नही कर सकते बल्कि वह तो अल्लाह के कलाम के बोझ को भी नही उठा सकते उसके नूर की बात तो अलग रही। फ़रमाया :

"अगर हम इस कुरआ़न को किसी पर्वत पर उतारते तो तू देखता कि अल्लाह के खौफ से पस्त होकर टुकड़े–टुकड़े हो जाता।"

मूसा अ० की इच्छा के जवाब में "अल्लाह ने कहा कि तुम मुझे नहीं देख सकते परन्तु उस पर्वत की ओर देखो अगर वो अपनी जगह रहा तो तुम मुझे देख लोगो लेकिन जब उनके रब ने पहाड़ पर अपनी तजल्ली को प्रकाशित किया तो पहाड़ के परखच्चे उड़ गये और मूसा अ० बेहोश होकर गिर पड़े। फिर जब होश में आये तो कहने लगे कि बेशक आप की ज़ात पाक और बे ऐब है। मैं आपके आगे तौब करता हूं। और मैं सब से पहले ईमान लाने वाला हूं।"

अल्लाह ने कहा ऐ मूसा। मैंने अपनी पैगम्बरी के लिए और अपनी वार्ता लाभ के लिए सारी दुन्या के लोगों के मुकाबले तुमको पसन्द किया और चुन लिया तो ऐ मूसा जो कुछ तुम को मैंने दिया है। उसको ले लो और शुक करने वाले बन जाओ।"

मूसा अ० ने अल्लाह तआ़ला की दी हुई उन तख़तियों को ले लिया जिन में बनी इस्राईल की जरूरत के अनुसार हर प्रकार की हिदायत और हर चीज़ को खोल–खोल कर बयान किया गया था। अल्लाह ने मूसा अ० को उन तखतियों को खूब अच्छी तरह से रखने और बनी इस्राईल को उसकी तमाम भली बातों के अनुसार काम करने का आदेश दिया।

उन तख़्तियों को लेकर जब मूसा अ० उन सत्तर लोगों के पास आये जिन को वह अपने साथ लाये थे। और उनको अल्लाह के इन आदेशों के बारे में बताया तो वह लोग बड़ी ढिठाई, बेशर्मी और निडरता से कहने लगे "हम लोग तो आप पर हरगिज़ विश्वास न करेंगे। जब तक कि हम खुद ही अल्लाह को साफ–साफ न देख लें ।

अल्लाह को उनकी इस गुस्ताख़ी और बेशर्मी पर बड़ा क्रोध आया और उन पर एक ऐसी बिजली गिरी कि वो उसे दहशत से देखते रह गये।

और उन लोगों ने समझ लिया कि जब वह अल्लाह की पैदा की हुई बिजली को नहीं बर्दाश्त कर सकते तो अल्लाह के नूर को किस तरह बर्दाश्त कर पायेंगे। इसके बाद मूसा अ० ने अल्लाह से दुआ की और कहा "ऐ पालनहार अगर तू चाहता तो पहलेही इनको और मुझे हलाक कर देता क्या तू बेवकूफों की वजह से हमें हलाक कर देगा।"

अल्लाह ने मूसा अ० की फरयाद सुन ली और उन लोगों को मौत के बाद, दुबारा जीवित कर दिया ताकि वे शुक्र करें।

बछड़ा

बनी इस्राईल कई शताब्दी मिस्र में मुशरिकीन के साथ रह चुके थे। और क़िबतियों की हालत यह थी कि वह बहुत सारी चीज़ों को पूजते थे। इसी वजह से उनके दिलों से शिर्क की बुराई और उसकी गन्दगी का एहसास खत्म हो गया था। बल्कि शिर्क का प्रेम उनके दिलों में घर कर चुका था। और शिर्क की महब्बत उनमें इस तरह घुस गई थी। जिस तरह पानी पुराने और कमजोर घर में घुस आता है। बनी इस्राईल को जब भी मौका मिलता शिर्क की ओर इस तरह लपकते जिस प्रकार पानी ढलान की ओर जाता है। उनके दिलों को रोग लग गया था। उनमें अच्छे बुरे की पहचानने की क्षमता समाप्त हो चुकी थी। उनकी यह आदत हो गई थी कि सीधा रास्ता देखते तो उस पर न चलते और अगर बुरा रास्ते पाते तो उसको अपना लेते।"

बनी इस्राईल ने जब फ़िरऔन की गुलामी से रिहाई पाकर समन्द्रर (त्मकेम) पार कर लिया "तो उन लोगों का एक ऐसी कौम के पास से गुज़र हुआ जो अपने चन्द बुतों से लगे बैठे थे। वो लोग कहने लगे कि ऐ मूसा हमारे लिए भी इन्हीं लोगों की तरह एक माबूद मुकर्रर कर दो" मूसा अ० को बड़ा क्रोध आया और आप ने फरमाया "तुम लोग बड़े ही ज़ालिम हो" कितनी आश्चर्य जनक बात है और कितना बड़ा अन्याय है। अल्लाह तआ़ला ने तुम को विभिन्न प्रकार की सुविधायें दीं। सारे जहान से तुम को अच्छा बनाया और तुम को हर वो चीज दी जो संसार के किसी अन्य कौम को नहीं दी। मूसा अ० ने उनसे कहा कि "क्या अल्लाह के सिवा किसी और को तुम्हारा माबूद बना दूं हालांकि उसने तुम लोगों को सारे जहां पर बरतरी दी है।

जब मूसा अ० तूर पर गये और कुछ दिनों के लिए उनसे अलग हो गये। मूसा अ० की अनुपस्थिति में वे शैतान के जाल में फंस गये और बुत की पूजा करने लगे और शिर्क का शिकार हो गये । उनकी अगुवाई के लिए "सामरी" नामक एक व्यक्ति उभर कर सामने आया फिर उसने लोगों के लिए एक बछड़ा निकाल खड़ा किया (यानी बछड़े की मूरत बनाई) जिस की बछड़े की सी आवाज भी थी फिर कहने लगा यही तुम्हारा माबूद है और मूसा का भी, लेकिन मूसा भूल गये।

बनी इस्राईल इस बछड़े के कारण सत्य के मार्ग से भटक गये और उसके सामने अन्धों के अनुसार गिर पड़े।

"क्या यह गुमराह लोग यह नहीं देखते कि वह बछड़ा तो उनकी बात का जवाब भी नहीं दे सकता । और न वह उनको कोई फायदा या नुकसान पहुंचा सकता है। क्या यह लोग नहीं देखते कि वह न उनसे बात करता है और न उनको रास्ता दिखाता है। बनी इस्राईल की इस गुमराही को देखकर हारून अ० ने उनको इन बुराइयों से बहुत रोका। और उनके सुधार की बड़ी कोशिश की। और कहा ऐ मेरी क़ौम इस बछड़े के कारण तुम गुमराही में पड़ गये हो वास्तव में तुम्हारा पालनहार रहमान ही है। तो तुम मेरी पैरवी करो और मेरी बात मानो।"

लेकिन बनी इस्राईल को सामिरी की जादुगरी ने गुमराही में डाल रखा था। और उनके दिलों में बछड़े का प्रेम घर कर गया था। उन्होंने हज़रत हारून अ० को टका सा जवाब दे दिया और कहने लगे कि मूसा की वापसी तक हम इसी के पुजारी बने रहेंगे।

सज़ा

जब मूसा अ० को अल्लाह ने बताया कि सामिरी ने बनी इस्राईल को गुमराह कर दिया है। तो मूसा अ० ने

अपनी कौम को खूब खरी खोटी सुनाई और अल्लाह के लिए अपने भाई हारून अ०से भी नाराज होते हुए कहा ऐ हारून इन लोगों को गुमराह होते हुए देखते रहे। इनको मना न किया मेरी बात न मानी क्या तू भी मेरे हुक्म की नाफरमानी कर बैठा। हारून अ०ने सफाई देते हुए कहा कि मुझे तो यह ख़याल हुआ कि आप कहीं यह न कहने लगें कि मेरे बाद तू ने बनी इस्राईल में फूट डाल दी और मेरी बात न मानी" और एक बात यह भी थी कि कौम के पाखंडियों ने मुझे कमजोर समझ लिया था और वह मुझ को मार डालने के इच्छुक थे।

इसके बाद मूसा अ० ने अल्लाह से दुआ की "ऐ मेरे रब मेरी और मेरे भाई की भूल चूक को माफ कर दे। और हमको अपनी रहमत में ले। तू सब रहम करने वालों से ज़ियादा रहम करने वाला है।

इस दुआ के बाद मूसा अ० सामरी की ओर मुतवज्जह हुए उससे पूछा तेरा क्या मामला है। उसने अपने अपराध को कबूल कर लियाऔर कहा कि मुझे यह अच्छा लगा इसलिए मैंने यह काम किया मूसा अ० ने उससे कहा कि अच्छा जा दुन्या में तेरी सजा यह है। कि तू कहते फिरेगा कि मुझे न छूना"

उसका सामाजिक बाईकाट किया गया उसका हुक्का पानी बंद कर दिया गया। वह जंगली जानवर की तरह हो गया। जिससे न कोई बात करने वाला था। और न कोई प्रेम जताने वाला । दुन्या में इससे बड़ी सजा और हो भी क्या सकती थी। जो आदमी हजारों की संख्या में लोगों को शिर्क की गंदगी से गन्दा कर दे। उसका ऐसा ही अन्त होना चाहिए । लोगों का उससे हर प्रकार का व्यवहार छोड़ देना चाहिए। जो अल्लाह और उसके सेवकों (बन्दों) के बीच रूकाट का कारण बने उसके और लोगों के बीच किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध न रहना चाहिए।

जो आदमी अल्लाह के साथ साझेदारी की बात करे वह बड़ा ही दुष्ट पाखण्डी है।

सामिरी को दण्डित कर मूसा अ० उस मनहूस मरदूद बछड़े की ओर मुतवज्जह हुए और उसको जलाकर समन्दर में बहा देने का आदेश दिया बनी इस्राईल ने उस बछड़े का अन्त देख लिया जिसको वह पूजते थे उनके सामने उसकी कमजोरी और बेबसी आ गयी (और वो समझ गये कि बछड़ा खुदा नहीं हो सकता)

इन सब कामों को समाप्त करके मूसा अ० बनी इस्राईल की ओर मुतवज्जह हुए और उनको अल्लाह का आदेश सुनाते हुए कहा – "ऐ मेरी कौम बछड़े की पूजा करके तुमने अपनी जानों पर जुल्म किया है। अब तुम अपने पैदा करने वाले की ओर आओ और अपने को आपस में क़त्ल करो अल्लाह के नजदीक तुम्हारी भलाई इसी में है।" उन लोगों ने मूसा अ० के आदेश के अनुसार किया और जिन लोगों ने बछड़े को नहीं पूजा था उन लोगों ने पुजारियों को मार डाला इस प्रकार अल्लाह ने उन अपराधियों को माफ कर दिया।

और अल्लाह तआला ने खुद ही कहा कि जिन लोगों ने गऊ शाला को पूजा है। दुन्यावी जीवन में ही अल्लाह की ओर से नाराज़गी और जिल्लत में पड़ेंगे और अल्लाह की ज़ात पर झूठ बकने वालों की यही सज़ा है।

इसीप्रकार से बछड़ा पूजने वालों और अल्लाह के साथ साझा लगानेवाले को कियामत तक ज़िल्लत और रूसवाई रहेगी।

इश्क़ से बेगाना ख़िलक़त,
अ़क्ल से बेगाना हम।
वह हमें दीवाना कहती,
और उसे दीवाना हम।।

Mohd. Aslam

(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796

Haji Safiullah & Sons

Jwellers

Nagina Market Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad Road, Lucknow.

सृष्टि मनुष्य और जीवन
(इस्लाम की दृष्टि में)

मु० ज़ाहिर

इस्लाम के उदय से पूर्व यह धरती अन्ध श्रद्धा तथा अन्ध विश्वास में पूर्ण रूप से डूबी हुई थी। इस वसुन्धरा पर जीवन यापन करने वाले मनुष्य पूर्णरूपेण छाये हुए अंधकार में टामक टोइयां मार रहे थे। जिस पथ पर चल पड़ते उसी पर निरंतर चलते रहते। कोई मार्ग दर्शक ऐसा न था, जो उन्हें मार्ग दिखाता। ऐसा कोई प्रकाश भी न था, जिसकी रौशनी में वह कुछ करते। अल्लाह (ईश्वर) और उसके बन्दों के मध्य संबन्ध टूट चुका था। लोग अपने अन्तिम परिणामों से बेखबर सो रहे थे।

ऐसी दशा में मनुष्यों के लिए यह ठीक न था कि वह इसी प्रकार अंधकार में डूबे रहते। उसे तो ऐसी वस्तु की आवश्यकता थी जो उसे एक सच्चे पथ पर डाल देती। वह वस्तु तो निष्ठा (अकीदा) है। इसी अकीदे के आधार पर जीवन का संगठन होता है। जीवन एक पथ पर चलता है। और अन्त में अपने उद्देश्य को प्राप्त होता है। यदि अकीदा (निष्ठा) बुरा होता है। तो उससे मूर्तिपूजा, विचारहीनता और फसाद पैदा होता है। इस्लाम ने आते ही इस अंधकार से मानवता को मुक्ति दिलायी। इस संसार को उपयुक्त परिभाषा की उसने बताया कि –

यह संसार यूं ही स्वतः उत्पन्न नहीं हो गया है। इसे तो इस संसार के पालनहार ने पैदा किया है। वह पालन हार सर्वशक्तिमान है। उसनक कार्य में कोई भी सम्मिलित नहीं। ईश्वर ही ने इस संसार का अकेले ही गठन किया। उसी ने इस संसार का कण कण बनाया। उसी का आदेश इस धरती पर चलता है। उसी के निर्देशानुसार पेड़ पौधों का पत्ता हिलता है। प्रत्येक जीव जन्त उसी के आगे नतमस्तक होते हैं।

पवित्र कुरआन में है –

१. हमने प्रत्येक वस्तु को एक अंदाजे से पैदा किया है (कमर–४६)

२. जब हम किसी वस्तु से कहते हैं कि हो जा तो वह हो जाती है। (नहल, ४०)

३. चन्द्रमा की हमने मंजिले बना दी हैं यहां तक कि वह अपनी उसी अपनी पुरानी हालत पर लोट आता है। (यासीन–३६)

इसी प्रकार और आयतें हैं । जिनमें ईश्वर की शक्ति और उसका अकेला होना जान पड़ता है।

हमारा खान पान हवाओं और बादलों का आना जाना, नक्षत्र, जीव जन्तुओं की बढ़ोत्तरी यह सब उसी पालन हार के निर्देश पर होता है।

इस संसार की संरचना अजीब है। इस सृष्टि की हर एक वस्तु और उसका आपसी संगठन – आपसी तालमेल आश्चर्य में डालने वाला है। उसी महान शक्तिशाली ईश्वर ने प्रत्येक वस्तु का एक समय और उसके कार्यों को निर्धारित किया है। जैसे–जैसे एक व्यक्ति का ज्ञान बढ़ता जाता है उसका आश्चर्य भी उसी अनुपात में बढता जाता है। ईश्वर के प्रति उसकी श्रद्धा और विश्वास में भी तेजी से वृद्धि होती जाती है। और वह अन्त में अन्तःकरण से कह उठता है। कि इस संसार का चलाने वाला एक है। इसका संचालन करने वाला भी एक है। उसी की उपासना होनी चाहिए।

केरिस मो रीसून जिसकी पुस्तक (मनुष्य अकेला नहीं ठहर सकता) है। उसका यह मानना यह है कि इस संसार का संचालन इसकी देख रेख किसी महाशक्ति शाली सत्ता के हाथों में अवश्य है। क्योंकि यदि यह धरती कुछ और मोटी होती तो इस पर जीवन कठिन होता, पौधे लुप्त हो जाते। इस तरह यदि हम प्रत्येक वस्तु पर विचार करें तो उस वस्तु का आपसी तालमेल ख़ुद इसका साक्षी होगा कि इस संसार की उत्पन्न करनेवाले एक ईश्वर है।

मनुष्य के प्रति इस्लाम की दृष्टि

मनुष्य इस संसार पर पाये जाने वाले सभी जीव जन्तुओं में से एक प्राणी है। महान ईश्वर ने इसे उनमें सबसे सुन्दर बनाया। इसे सम्पूर्ण प्राणियों पर श्रेष्ठता दो। इस धरती पर पाये जानेवाले सभी प्राणी, पेड़ पौधे, चन्द्रमा, सूर्य इत्यादि मनुष्य की सेवा के लिए उत्पन्न किये गेय हैं। ताकि मनुष्य एकेश्वर की ही उपासना करें

और अपने मस्तिष्क को उसी के आगे झुकाएं। उसे किसी दूसरी वस्तु की उपासना की आवश्यकता नहीं है। पवित्र कुरआन मनुष्यों की श्रेष्ठता को इस प्रकार बयान करता है। हमने (अल्लाह) मनुष्यों को इज्जत दी, जल थल पर उसे सवार कराया, उसे पवित्र खान पान दिया, उसे अपनी सम्पूर्ण पैदा की गई जीवों पर प्रधानता दी।'' (असरा–७०)

ईश्वर ने इस संसार की कुछ वस्तुओं को उसके अधीन कर दिया उसे इस धरती पर अपना ख़लीफ़ा बनाया।

पवित्र कुरआन उसके प्रति कहता है।

और उस समय को ध्यान में लाओ जब तुम्हारे पालनहार ने फ़िरिश्तों से कहा – मैं इस वसुन्धरा पर अपना खलीफा । बनाने वाला हूं।'' (बकरः–३०)

ईश्वर ने उसके साथ साथ उसे विचार विमर्श करने की योग्यता भी प्रदान की। ताकि वह अल्लाह की उस अमानत का भार उठा सके। जिसे ईश्वर के देवदूतों (रसूल) ने मनुष्यों के मार्ग दर्शन के लिए उसका भार उठाया। और उसे एक सच्चे पथ पर लगा दिया

इस्लाम मानव के प्रति जोर देकर कहता है कि इस धरती पर बसने वाले मनुष्य एक हैं। सबके पिता हजरत आदम भी एक हैं। परन्तु परधानता उसको दी जायेगी जिसके हृदय में संयम (तकवा) होगा। और सदा अच्छे कर्मों को गृहण करने वाला होगा। जाति पाति, रंगनस्ल इत्यादि से कोई मनुष्य किसी से श्रेष्ठ नहीं है।

इस्लाम की दृष्टि में सबसे मेन आधार तो निष्ठा (अकीदा) है। भाषा रहन सहन जाति पाति आदि आधार पर नहीं है।

मनुष्यों का एक मात्र उद्देश्य एक ईश्वर की उपासना करना है। उसे तो सिर्फ इस लिए पैदा किया गया है। कि वह ईश्वर को ही पूजे जो निराकार और सगुण है। उसी के आदेशनुसार जीवन यापन भी करना है। बस जो आदेश ईश्वर ने दे दिया उसी पर उसे अपने को मिटा देना है।

एकेश्वर की उपासना के साथ आपसी लेन देन, क्रय–विक्रय भी उसी के आदेश से करना है।

आज मनुष्यों में से कुछ ने ईश्वर की उपासना ही को सम्पूर्ण धर्म मान लिया है। जबकि ऐसा ठीक नहीं। इस्लाम तो एक सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था तथा शाश्वत जीवन नियम है। अतः ईश्वर की उपासना ही को सब कुछ समझना ठीक नहीं।

मुहम्मद असद ने इस बात को इस प्रकार कहा है।

इस्लाम, केवल उपासना, नमाज, व्रत इत्यादि का नाम नहीं अपितु यह सम्पूर्ण जीवन को अपने घेरे में लिए हुए है।

इस्लाम की दृष्टि में यह जीवन

यह जीवन ईश्वर की बुद्धि मत्ता और उसके ज्ञान का स्पष्ट प्रदर्शन है। ईश्वर ने प्रकृति की साजीव सरचना की है मानव ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ सृष्टि है। मानव का यह जीवन यूंही संयोगवश उत्पन्न नहीं हो गया है। और नहीं किसी ग़ैरुल्लाह ने इसकी उत्पत्ति की है।

अतः इस पृथ्वी पर रहने सहने वाले मनुष्यों पर अनिवार्य है। कि वह एक ही ईश्वर में आस्था रखें और एक ही अ़क़ीदे (निष्ठा) पर पूरी दृढ़ता से जमें रहें। इस निष्ठा का सीधा सम्बन्ध ईश्वर की वाणी (वहीं) से है। जो महान ईश्वर के अतिप्रिय अन्तिम सन्देष्टा मुहम्मद साहब अवतरित हुई । (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आपने ईश्वर की वाणी को ए टू जेड सम्पूर्ण मानवता को पहुंचा दिया। पवित्र कुरआन कहता है –

ऐसे ही हमने (अल्लाह ने) आपको अपने आदेश की रूह वही की आपको ज्ञात न था कि पुस्तक क्या वस्तु है। ईमान क्या है। लेकिन हमने उसको नूर बनाया जिससे हम जिसको चाहते हैं मार्गदर्शन, करा देते हैं। और आप सीधे पथ पर मार्गदर्शन करते हैं। ऐसे ईश्वर का मार्ग आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है। वह सब उसी का है। सुनो ईश्वर के पास सारे मुआमलात लौट कर आते हैं। (शूरा– ५२,५३)

अतः यह बात पूर्ण रूप से स्पष्ट हो गई कि हमें ईश्वर के निर्देशानुसार जीवन यापन करना है। यदि कोई चोरी करता है तो उसका हाथ कुरआन के आदेशानुसार काट दिया जाना चाहिए यदि कोई किसी को क़त्ल करता है तो उसे क़त्ल कर दिया जाये । परन्तु इसका प्रचलन वहीं होगा जहां इस्लामी शासन होगा कोई व्यक्तिगत रूप से इस को लागू करेगा तो वह दण्डित होगा।

पुरुष और स्त्री के प्रति जो कानून है। उन्हीं को लागू होना चाहिए और इस्लाम ने दोनों में जो फर्क रखा है। उसको भी लागू होना चाहिए।

पवित्र कुरआन कहता है –

(शेष पृष्ठ ३० पर)

अन्तिम सन्देष्टा की जन्मतिथि

मुहम्मद अली जौहर
मुजफ्फर नगरी

राह में कांटे जिसने बिछाये
गाली दी पत्थर बरसाए
उस पर छिड़की प्यार की शबनम
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

अल्लाह तआला ने अपने बन्दों (दासों) की हिदायत (मार्गदर्शन) के लिए विभिन्न युगों में अनेक सन्देष्टा भेजे जिन्होंने अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार अपनी अपनी उम्मतों का मार्गदर्शन किया। इस्लाम धर्म जो कि एक विश्वव्यापी धर्म है इसके अन्तिम संदेष्टा और हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं प्यारे नबी की जन्मतिथि के बारे में विभिन्न प्रकार की रिवायतें पाई जाती हैं और इस विषय पर बड़े–बड़े मुस्लिम विद्वानों ने अपने अपने ज्ञान के अनुसार बहस की है और लिखा है परन्तु अभी तक यह मुआमला भिन्न ही है।

जन्मतिथि – हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जन्म बहार के मौसम में, सोमवार को, ६ रबीउल अव्वल, आमुल–फील मुताबिक २२ अप्रैल ५७१ ईस्वी, जेठ महीने की पहली तारीख को, सुबह सादिक के बाद, सूर्योदय से पहले मक्का मअज़्ज़मा में हुआ जैसा कि ज्ञात हो चुका है कि जन्मतिथि के बारे में इख्तिलाफ है, अल्लामा तबरी और इब्ने ख़ल्लदून ने १२ और अबुल–फदा ने १० तारीख लिखी है मगर सबका इस बात पर इत्तिफाक़ है कि दिन सोमवार ही हैं और सोमवार और १२ तारीख के अतिरिक्त किसी और तारीख में मेल नहीं खाता इसलिए सही रिवायत १२ तारीख है और सुप्रसिद्ध पुस्तक "तारीखे दुबलुल अरब वल इस्लाम' में मुहम्मद तलअत अरब ने भी १२ तारीख को ही सही कहा है और फल्कीयात के प्रसिद्ध ज्ञानी मिस्री मुहक़िक़ महमूद बाशा की तहकीक है कि आपका जन्म सोमवार, व रबीउल–अव्वल को वाकिये–फील के पहले वर्ष हुआ जो २२ अप्रैल ५७१ ईस्वी के अनुसार है।

सोमवार की भूमिका – जब आप हज़रत मुहम्मद सल्ल० की जीवन शैली पर नज़र दौड़ायेंगे और थोड़ा ध्यान देंगे तो एक आश्चर्य जनक बात सामने आयेगी और वह होगी "सोमवार" अब जरा ध्यान दें कि प्यारे नबी का जन्म सोमवार को हुआ, प्यारे नबी को नबुव्वत सोमवार को मिली, प्यारे नबी ने हिजरत सोमवार को फरमायी और प्यारे नबी का देहान्त भी सोमवार को हुआ। आमु–ल–फील – अरबी में आम का अर्थ होता है साल, वर्ष और फील का अर्थ होता है हाथी। आमु–ल–फील का मतलब हुआ हाथी के बरस हुआ यूं कि एक राजा जिसका नाम अबरहा था उसने हाथियों की सेना के साथ साथ काबे शरीफ पर चढ़ाई कर दी और राजा स्वयं महमूद नामक हाथी पर सवार हो कर आया तथा अरब वाले इन के मुकाबले की ताकत नहीं रखते थे सिर्फ अल्लाह तलाआ से दुआ करते रहे इस हमले में अल्लाह तआला की खुली सहायता आयी। छोटे – छोटे परिन्दों के झुंडों ने उनको हलाक कर दिया परिन्दों के झुन्ड को अबाबील कहा जाता है। अबरहा भी "सन्आ" नामक स्थान पर मारा गया और काबे का वह कुछ न बिगाड़ सके। अरबों के लिए यह साल बड़ा महत्वपूर्ण था आप सल्ल० आमु–ल–फील के वाकिये से ५५ दिन बाद पैदा हुए।

समय – हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जन्म सुबह सवेरे धूप घड़ी के अनुसार ४ बजकर २० मिनट पर और जो समय अरब में अब चलता है। उसके अनुसार ६ बजकर ५७ मिनट पर हुआ सूर्य उस समय ३१.२० देर्जे पर था और जैठ की पहली तारीख शुरू होने पर १३ घण्टे १६ मिनट बीत चुके थे।

मृत्युतिथि – हज़रत मुहम्मद सल्ल० का निधन १२ रबीउल अव्वल सन ११ हिजरी सोमवार को चाश्त के समय (जब सूर्य आकाश में चढ़ता है लेकिन आधे दिन तक नहीं पहुंचा होता) ६३ वर्ष ४ दिन की आयु में हुआ।

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन

(शेष पृष्ठ ३६ का)

खुद पूरी कर लेते । घर में नम्र, मुस्कराते हुए और प्रसन्न रहते, नौकरों को कभी झिड़कते नहीं।

हज़रत अली (रज़ि०) का बयान है कि रूसले खुदा (सल्ल०) घर में आते तो कुछ समय खुदा की इबादत में बीतता, कुछ समय बाल बच्चों में और कुछ आपने आराम में। कुछ समय मुलाक़ातियों के लिए भी निकालते।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का व्यक्तित्व

हबीबुल्लाह आज़मी

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कोई चित्र या तस्वीर मौजूद नहीं है। स्वयं आप (सल्ल०) ने उम्मत को इससे मना किया क्यों कि तस्वीर का फ़ित्ना शिर्क और अंततः पूजा अर्चना तक पहुंचता, जो इस्लाम के बुनयादी सिद्धान्त के विरुद्ध है। लेकिन हुजूर (सल्ल०) के सहाबियों ने शब्दों में आप (सल्ल०) का चित्रण किया है ताकि इस महान इंसान के आचरण और जीवन शैली का अध्ययन करने से पहले उसकी एक झलक देख लें।

आप (सल्ल०) के पवित्र चेहरे, आकार चाल ढाल और वैभव (वजाहत) काल के पर्दे से छन कर जो हम तक पहुंचा है वह बहर हाल ऐसे इंसान की तस्वीर है जिस में बुद्धिमानी, वीरता, धैर्य, दृढ़ता, सच्चाई, ईमानदारी, महानता, दानशीलता, कर्तव्यपालन तथा प्रतिष्ठा साफ़ झलकती है।

इस सिलसिले में विभिन्न प्रतिष्ठत लोगों के निम्न विचार इस सत्य के सूर्य की पैग़म्बरी को प्रमाणित करता है –

१. एक यहूदी विद्वान, जिनका नाम हुसेन था जब उन्होंने मदीने आने पर आप (सल्ल०) को देखा तो कह उठे कि आपका चेहरा एक झूठे इंसान का चेहरा नहीं हो सकता और ईमान लाए और नाम अब्दुल्ला रखा गया।

२. मदीना में एक तिजारती क़ाफिला आया और नगर के बाहर ठहरा। हुजूर (सल्ल०) ने उनसे एक ऊंट का सौदा किया और यह कहकर ऊंट को साथ ले गए कि दाम भेजवा देता हूं। बाद में क़ाफ़िले वालों को चिन्ता हुई कि बिना पहचाने ऊंट ले जाने दिया इस पर क़ाफ़िले की एक महिला ने कहा धैर्य रखो मैंने उस आदमी का चेहरा देखा था चौदहवीं रात की तरह रौशन था वह कभी तुम्हारे साथ बेइमानी करने वाला नहीं हो सकता। बाद में हुजूर (सल्ल०) ने तय की हुई क़ीमत से अधिक की खुजूरें भेजवादीं।

अबूक़र साफ़ा की माता और खाला हुजूर (सल्ल०) की सेवा में अबूक़र साफ़ा के साथ इस्लाम लाने के लिए गई थीं और लौटते समय उन्होंने अपनी यह भावना प्रकट की कि "हमने ऐसा सुन्दर व्यक्ति और नहीं देखा ..... हमने इसके मुख से रोशनी सी निकलती देखी।

हुजूर (सल्ल०) का शाब्दिक चित्र :–

हिजरत का सफर तय करते हुए जब आप अपनी पहली मंजिल गारे सौर से चले तो पहले ही रोज़ रास्ते में एक नेक बुढ़िया उम्मे मअ़बद (रज़ि०) का ख़ेमा पड़ा। आप (सल्ल०) और आप के साथी प्यासे थे उस बुढ़िया के पास एक मरियल सी बकरी थी मगर जब उसने आप (सल्ल०) और आप के साथियों के लिए दूध दूहना शुरू किया तो उससे इतना दूध निकला कि आप (सल्ल०) और आप के साथियों के पीने के बाद भी बच गया। जब उम्मे मअ़बद के शौहर घर लौटे तो घर में दूध देखकर अचम्भे से पूछा यह कहां से आया? उम्मे मअ़बद ने सारा हाल कह सुनाया। वह पूछने लगे अच्छा उस कुरैशी नवजवान का नक्शा तो बयान करो यह वही तो नहीं है जिसकी तमन्ना है। इस पर उम्मे मअ़बद ने सुन्दर शब्दों में तस्वीर इस प्रकार खींची ।

"पवित्र व विशाल चेहरा, मनमोहक स्वभाव, न पेट बाहर निकला हुआ न सिर के बार गिरे हुए, सुन्दर मुखड़ा, आंखें काली और बड़ी, बाल लम्बे और घने आवाज़ में भारी पन, ऊंची गर्दन, बारीक भंवें, काले घुंघराले बाल, ख़ामोश शान्ति व्यक्तित्व, दूर से देखने में सुन्दर मनलुभावन निकट से मधुर वाणी, तमाम वार्ता मोतियों की लड़ी जैसी पिरोई हुई, दर्मियाना क़द।

लिबास (वस्त्र) :–

लिबास आदमी की ज़ेहनियत आचार विचार उसके आचरण, स्वभाव को बड़ी हद तक दर्शाता हैं। हुजूर (सल्ल०) के लिबास के बारे में जो मालूमात उनके साथियों ने दी हैं वह अनके ज़ौक (अभिरूचि) को ज़ाहिर करती हैं। लिबास के मामिले में आप इस आयत का नमूना पेश करते हैं – अनुवाद –"ऐ औलादे आदम! हमने तुम्हारे सतर (गुप्तभाग) ढाकने वाला और तुम्हें ज़ीनत (सुसज्जित) देने वाला लिबास तुम्हारे लिए मुक़र्रर किया और तकवे का लिबास (संयम का वस्त्र) बेहतरीन है"।

अतः हुजूर (सल्ल०) का लिबास सतर ढाकने वाला, सुसज्जित करने वाला और तक़वे का लिबास था। हुजूर को घमण्ड से बैर था परन्तु ठाठ बाठ

(शेष पृष्ठ ३७ पर)

से रहना पसन्द था।

आप (सल्ल०) को कुरता बहुत पसन्द था। आस्तीन न तंग रखते थे न अधिक खुली। आस्तीन कलाई और हाथ के जोड़ तक पहुंचती। यात्रा में खासतौर से जिहाद के लिए जो कुरता पहनते उस के दामन और आस्तीन की लम्बाई कम होती। उम्र भर तहबन्द (लुंगी) इस्तेमाल फ़रमाई जिसे नाफ़ से ज़रा नीचे बांधते और टखनों से ज़रा ऊँचा रखते, सामने का भाग ज़रा अधिक झुका रहता। पाजामा देखा तो पसन्द किया। सर पर मामा (साफ़ा) बान्धना पसन्द फ़रमाते। यह बहुत भारी होता था न छोटा। इमामा का शिमला बालिश्त भर ज़रूर छोड़ते जो पीछे की तरफ़ दोनों कंधों के बीच में रहता।

ओढ़ने की चादर चार गज़ लम्बी सवा दो गज़ चौड़ी होती थी। कभी लपेट लेते, कभी एक पल्लू सीधे बग़ल से निकाल कर उलटे कन्धे पर डाल लेते।

नया कपड़ा खुदा की प्रशंसा के साथ आम तौर पर जुमा के दिन पहनते। फाज़िल जोड़ा बनवा कर नहीं रखते, कपड़ों में पेवन्द भी लगाते थे। सफ़ेद कपड़े का लिबास आप को अधिक पसंद था। सफ़ेद के बाद हरा रंग भी आप पसन्द फ़रमाते।

जूता— चप्पल या खड़ाऊं की सी शकल का था। जिसके दो तस्मे में एक अंगूठे और साथ वाली उंगुली के बीच रहता दूसरा छंगुलियों और उसके साथ वाली उंगली के बीच। मोज़े भी प्रयोग में रहे, चांदी की अंगूठी भी इस्तेमाल फरमाई।

वेशभूषा और श्रंगार :— हुजूर अपने बाल बहुत सलीक़े से रखते। उनमे तेल लगाते, कंघा करते मांग निकालते। लबों (होंठ) के बढ़े बाल को तराशते, दाढ़ी को भी कैंची से बराबर करते। सफ़र में सात चीज़ें हमेशा साथ रहतीं। बिस्तर के करीब (१) तेल की शीशी (२) कंघा (३) सुरमेदानी (४) कैंची (५) मिस्वाक (६) आइना (७) लकड़ी की एक पतली खपच्ची।

वार्तालाप :— आदमी की बातचीत से उसका ईमान और आचरण पूरी तरह ज़ाहिर हो जाता है। विषय, शब्दों का चुनाव, वाक्यों की शैली, आवाज़ का उतार चढ़ाव आदमी के व्यक्तित्व को प्रदर्शित करता है। एक तरफ आप (सल्ल०) चिन्ताओं, संघर्ष और ज़िम्मेदारियों के बोझ और समस्याओं से घिरे रहते और तरह तरह की परेशानियों से गुज़रते लेकिन दूसरी तरफ़ लोगों में खूब घुलना मिलना भी रहता। हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़ि०) के शब्दों में "जब हम सांसारिक मामिलों का ज़िक्र करते तो हुजूर (सल्ल०) भी इस में भाग लेते जब हम आखिरत की बात करते तो हुजूर (सल्ल०) भी हमारे साथ इस विषय पर वार्तालाप करते, जब हम खाने पीने की बात छेड़ते तो हुजूर (सल्ल०) भी इस में शामिल रहते।" इसके बावजूद आप (सल्ल०) ने खुदा की क़सम खाकर यह सच्चाई बयान फ़रमाई कि मेरी ज़बान से हक़ (सत्य) के सिवा कोई बात अदा नहीं होती।

बातचीत में इशारों से भी काम लेते। हुजूर ने अपनी दावत और मिशन की आवश्यकतानुसार खुद अपनी भाषा और शैली बनाई थी।

ख़िताबत (भाषण) : आप (सल्ल०) ने समाज की आवश्यकता और स्रोताओं के बुद्धि स्तर को देखकर संतुलन के साथ भाषण क्षमता का प्रयोग किया। मस्जिद में भाषण देते तो अपनी छड़ी पर सहारा लेते जंग में तक़रीर करते तो कमान पर टेक लगाते, हाथों को ज़रूरत के अनुसार हरकत देते। अपनी बात पर बल देने के लिए — (क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्जे में मेरी जान है या मुहम्मद की जान है) कह कर क़सम खाते। स्वर में भी और चेहरे पर भी दिल के सच्चे जज़्बात झलकते जो सुनने वालों को प्रभावित करते।

आम सामाजिक सम्बन्ध: हुजूर (सल्ल०) महान्ता की उच्च श्रेणी पर पहुंच कर तथा इतिहास के रुख़ बदलने वाले कारनामे अंजाम देकर साधारण जन समाज से भी सम्बन्ध रखते थे। आप (सल्ल०) में अलग थलग रहने और घमण्ड तनिक भी नहीं था।

आपका स्वभाव था कि रास्ते में मिलने वालों से सलाम करने में पहल करते, किसी को संदेश भेज वाते तो सलाम ज़रूर कहलवाते।

मज्लिस में जाते तो इसको नापसन्द करते कि सहाबा खड़े हों। जो वार्तालाप चल रहा हो उसी में शामिल हो जाते। बीमारों का हाल चाल पूछने के लिए ज़रूर जाते, पेशानी और नब्ज पर हाथ रखते । उनके स्वास्थ के लिए दुआ करते।

निजी ज़िन्दगी :— हज़रत आइशा (रज़ि०) से किसी ने पूछा कि रसूलुल्लाह अपने घर में क्या करते थे। उन्होंने ने फ़रमाया— आप आदमियों में से एक आदमी थे। अपने कपड़ों की देख भाल खुद ही कर लेते, बकरी का दूध खुद दूहते और अपनी ज़रूरतें

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

मुईद अशरफ़ नदवी

● समाचारपत्र जंग के अनुसार इस समय संसार में ६१ इस्लामी देश पाए जाते हैं। यह आज़र बाईजान, आयवरी कोस्ट, उर्दुन, उज़बकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, अलबानिया, अलज़ज़ाएर, इण्डोनेशिया, ईरान, बहरेन, बरकीनाफ़ासू, बरूनाई, बंगलादेश, बूसेनिया, बेनिन, पाकिस्तान ताजकिस्तान, तुर्कमानिस्तान, तुर्की, तनज़ानिया, टयूनिस, टूगोजबूती, चाड, श्रीनाम, सऊदीअरब, सूडान, सीरालीवन, सीनीगाल, शाम, सूमालिया, इराक़, अम्मान, फ़िलिस्तीन, क़ाजिकिस्तान, क़तर, किरगिकिज़स्तान, कमूरू, कोवैत, लीबिया, मारीतानिया, मालद्वप, माली, इमारात, मराकश, मिस्र, मलेशिया, मुज़म्बीक़, नाइजर, नाइजीरिया, मध्य अफ़रीका, यमन और योगेण्डा है।

इन६१ देशों में मुसलमानों की जनसंख्या एक अरब, ४० करोड़ ३१ लाख ५१ हजार है।

इन देशों का कुल क्षेत्र फल ३ करोड़ ४८ लाख, १६ हजार, ७सौ ६० किलोमीटर है। और इनके पास प्रिशिक्षित सेना ६६ लाख ७६ हजार ५ सौ ६ है। और यह हर साल सुरक्षा पर ७६ अरब ६ सौ ५० मिलियन डालर खर्च करते हैं। जिनके पास एटमबम, मीजाईल, जहाज़ और तोपें हैं। केवल सऊदी अरब अपनी सेना पर साला २१ अरब ६ सौ ७६ मिलियन डालर खर्च करता है, तुर्की का बजट सवा दस अरब है, ईरान सुरक्षा पर पौने ६ अरब, कोयत स्वतीन, यूथोपिया स्वातीन, अलजीरिया तीन, मिस्र पौने तीन, इराक़, मराकश, अ़म्मान और क़तर दो अरब खर्च करते हैं लेकिन एक अरब ४० करोड़ ३१ लाख ५१ हजार मुसलमान और ६६ लाख ७६ हजार ८ सौ ६० मुस्लिम फौजी इराक को नहीं बचा सके।

इसी के साथ साथ मालदार अरब देश और ऐशिया अफ़रीका के मुसलमानों के पश्चिमी देशों के बैंकों में लगभग ८०० अरब की रक़म जमा है जिस को इस्लाम दुश्मन शक्तियां अपने विकास के लिए प्रयोग कर रही हैं और दूसरी तरफ इस रक़म के केवल एक भाग को सीधे या अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं द्वारा मुसलमान देशें को उधार देकर, उन पर बिनाशकारी प्रतिबन्ध लगाकर उनकी अर्थव्यवस्था को अपनी आधीन बना रही है।

जबकि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में मुसलमानों का भाग केवल ७ प्रतिशत है। यह नतीजा है इस्लामी अर्थ व्यवस्था से पलायन, सूदी अर्थव्यवस्था को अपनाने, तालीम विज्ञान, टेकनालोजी और अनुसन्धन और विकास के क्षेत्रों की अनदेखी करने, मुसलमानों का आपसी सहयोग न होने, मसुलमानों की दौलत पश्चिमी देशों में पूजी निवेश करने के झुकाव के कारण पूंजीवादी शक्तियों को इस्लामी देशों पर खुली हुई निर्णायक ज्येष्ठता प्राप्त है।

● इस्राईल में गत एक साल में लगभग एक हज़ार कम उम्र बच्चों ने आत्महत्या करने की कोशिश की है। जिसमें से लगभग सौ बच्चों की अम्रें ८ वर्ष से १२ वर्ष के बीच बताई जाती है। चुनानचः पिछले दिनों एक इस्राईली बाप ने यूं ही अपनी ८ वर्षी बेटी की डायरी देखनी चाही ताकि लड़की की ज़ेहनी सोच को जान सके। डायरी के पन्ने उलटने पर बाप के लिए यह वाक्या बिजली बन कर गिरे जो यूं थे – मैं आत्म हत्या करना चाहती हूं।" यह वाक्या उसकी बेटी ने अपनी डायरी के विभिन्न पन्नों पर लिख रखे थे। कम उम्र बच्चों के कल्याण के लिए इस्राईल में स्थापित सरकारी संस्था का कहना है कि इतनी कम उम्री में बच्चों को आत्महतया की प्रवृत्ति का पाया जाना बहुत ही ख़तरनाक है। इसका कारण है घरेलू आपस झगड़े, बड़ों द्वारा बच्चों का यौन शोषण मारपीट, मनोयातनाएं, इसके अतिरिक्त माता पिता का नशे का आदी होना है।

फिलीपाईन को राष्ट्रपति गलोरियामा ने देश के इतिहास में पहली बार एक मुसलमान मेम्बर पार्लियामेंट को जन सम्पर्क मंत्री निमुक्ति किया है। स्पष्ट है कि फ़िलीपाइन में मुसलमानों की संख्या सात प्रतिशत है। इससे पहले भी मुसलमान पार्लियामेंट में सदस्य बनते रहे हैं, परन्तु यह पहला अवसर है कि किसी मुसलमान सदस्य को इस पद पर नियक्ति किया गया है। फिलीपाईन की सरकार का यह क़दम दूसरे समुदायों को सरकार के निकट करने के उद्देश्य से उठाया गया है।